तांत्रिक
जड़ी बूटी दर्शन
रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार
प्रो॰ अवतार सिंह 'अटवाल'

# तान्त्रिक जड़ी बूटी दर्शन

जड़ी बूटियों के सम्बन्ध में जो इस पुस्तक में बताया गया है, वह पूर्ण रूप से सत्य है। मेरे अपने जीवन के अनुभवों का जो सार संग्रह है, उसी को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आप सबको पूरी-पूरी व प्रामाणिक जानकारी हो सके इसके लिए जिन वस्तुओं का विवरण दिया है उनके रंगीन फोटो भी आपके लिए इस पुस्तक में प्रस्तुत हैं। मेरा लक्ष्य है कि यह भारतीय परंपरागत ज्ञान आपके काम आ सके। ☐☐

## योगीराज अवतार सिंह 'अटवाल' की
## अन्य असली पुस्तकें

---

1. तन्त्र महायोग
2. महाविद्या तन्त्र-मन्त्र
3. गुरु नानक मन्त्र शक्ति
4. मन्त्र पोथी
5. बावन जंजीरा

उपरोक्त पाँचों पुस्तकें मंगवाकर आप अध्ययन करें तो स्वयं जान लेंगे कि लेखक एक व्यवहारिक तान्त्रिक हैं जो केवल जाँचकर, परखकर, प्रयोग करके ही इस विषय की सामग्री पाठकों को देते हैं।

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

तान्त्रिक

# जड़ी बूटी दर्शन

तान्त्रिक प्रयोग में आने वाली जड़ी-बूटियों एवं
अन्य सामग्री के कैमरा फोटो सहित
एकमात्र पुस्तक

लेखक—
योगीराज अवतार सिंह 'अटवाल'

मूल्य : ₹ 150.00

प्रकाशक
रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

# अनुक्रमणिका

# मंत्र तंत्र एवं ज्योतिष की अन्य पुस्तकें

- ❖मन्त्र दीक्षा (महावीर प्रसाद मिश्र)
- ❖अन्धविश्वास सत्य और तथ्य (गोपाल राजू)
- ❖तन्त्र द्वारा दूर करें दुर्भाग्य (गोपाल राजू)
- ❖जन्म कुण्डली में ग्रह बाधा और निदान (राम कृष्ण शर्मा)
- ❖कल्याणकारी शनि देवता (राम कृष्ण शर्मा)
- ❖मंत्र साधना कैसे करें (तांत्रिक बहल)
- ❖तंत्र साधना कैसे करें (तांत्रिक बहल)
- ❖यन्त्र माला (योगीराज यशपाल जी)
- ❖स्वप्न सिद्धांत (योगीराज यशपाल जी)
- ❖पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें (तांत्रिक बहल)
- ❖संकटमोचनी कालिका सिद्धि (यशपाल जी)
- ❖सृष्टि का रहस्य दश महाविद्या (रंगीन चित्रों सहित)
- ❖चाणक्य विरचित तंत्र-मंत्र-यंत्र (तांत्रिक बहल)
- ❖मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनायें (तांत्रिक बहल)
- ❖धनदायक तांत्रिक प्रयोग (गोपाल राजू)
- ❖तन्त्र द्वारा रोग निवारण (तांत्रिक बहल)

मूल्य व अन्य जानकारी के लिए लिखें–

**रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार-249401**

# भूमिका

किसी भी तन्त्र साहित्य की सिद्धि पूर्णतः सम्पन्न करने के लिए आवश्यक है कि तन्त्र साहित्य के मूल रहस्यों को पूर्ण रूपेण समझ लिया जाए। आज तन्त्र साहित्य के अनेक ग्रन्थ मिल जाते हैं, उनमें जिन प्रयोगों का वर्णन है, वे सत्य हैं, परन्तु उन प्रयोगों में जो सामग्री प्रयोग होती है, उसका पूर्ण परिचय (पहचान) न होने से हम तन्त्र साहित्य से लाभ प्राप्त नहीं कर सकते।

मैंने इस कमी को दूर करने के लिए 'तान्त्रिक जड़ी-बूटी दर्पण' नामक पुस्तक पुस्तक तैयार की है, जिसमें प्रत्येक जड़ी अथवा औषधि की पहचान के लिए उस जड़ी का चित्र अथवा जड़ी का मूल नाम तथा अनेक प्रयोगों का वर्णन प्रस्तुत किया है, ताकि हमारे भावी तान्त्रिकों को तन्त्र सिद्धि प्राप्त करने में कोई कठिनता न हो।

ऐसी एक पुस्तक को सुहृदय पाठकों को समर्पित करने की मेरी हार्दिक इच्छा थी जो मैंने अपने कड़े परिश्रम से पूर्ण करके पुस्तक रूपी रत्न आपको भेंट किया है। मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि प्रस्तुत पुस्तक आपको पूर्णतः सन्तुष्ट करेगी तथा मैं अति शीघ्र ही इसका दूसरा भाग आपकी सेवा में समर्पित करने का प्रण करता हूँ।

आप इस पुस्तक में वर्णित सामग्री को कहीं से भी बड़ी सुगमता

के साथ प्राप्त कर सकते हैं और यदि कोई सामग्री प्राप्त करने में कुछ कठिनता हो तो वह सामग्री आप हम से पत्र डालकर प्राप्त कर सकते हैं। यह पुस्तक तंत्र शास्त्र की सफल सीढ़ी है, जो आपको तन्त्र सिद्धि की मंजिल तक पहुंचा देगी।

मैं अति प्रसन्न हूँ कि मेरा यह ज्ञान आप के काम आ सके तथा आप इस पुस्तक को पढ़कर हमें पत्र लिखें कि हमारा यह प्रयास कैसा रहा ? ताकि आपके परामर्श से और आपकी सहायता से हम इस पुस्तक का दूसरा भाग तैयार कर सकें और आपकी सेवा में शीघ्रातिशीघ्र प्रस्तुत कर सकें।

जड़ी बूटियों के संबंध में हमने जो कुछ इस पुस्तक में बताया है, वह पूर्ण रूप से सत्य है। मैं स्वयं तंत्र शास्त्र के प्रयोग करता हूँ, और इन बूटियों का प्रभाव मैंने अपने प्रयोगों में स्पष्टतः सफल पाया है।

यह पुस्तक मुख्यतः मेरे अपने जीवन के अनुभवों का संग्रह है जिसको मैं आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इस पुस्तक के अध्ययन से आप अपने जीवन में सिद्धि प्राप्त करके अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं। इस पुस्तक में बताए गए प्रयोगों को कार्य रूप देने से पहले, उस प्रयोग के लिए बताई गई सामग्री को तान्त्रिक विधि से प्राप्त करके ही प्रयोग करें, अन्यथा सफलता में संदेह की सम्भावना है। इस पुस्तक में बताए

*गए प्रयोगों को विधि पूर्वक करके आप जीवन में सफल हों, यही मेरी कामना है।*

*अन्त में मैं अपने परम हितैषी श्री सोहन लाल जी का आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को शुद्धता प्रदान करके मेरी बहुत सहायता की है।*

*इसी प्रयास के साथ. . . !*

9 नवम्बर, 1992 — आपका

कार्तिक शु० 13, संवत् 2049 — **अवतार सिंह अटवाल तान्त्रिक**

# तान्त्रिक जड़ी-बूटी दर्शन

## किसी जड़ी (मूल) को प्राप्त करने के नियम और सावधानी

जब कभी भी हमें किसी जड़ी अथवा पौधे की तन्त्र प्रयोग के लिए आवश्यकता पड़े, तो हमें शुद्ध होकर तथा ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए और गोपनीयता का विशेष ध्यान रखते हुए औषधि अथवा मूल को प्राप्त करने के लिए प्रस्थान करना चाहिए। किसी मूल अथवा पौधे को प्राप्त करते समय निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए—

- ❖ जिस दिन जड़ी या औषधि लानी हो, उस दिन से पहले दिन शुद्ध होकर उस औषधि को न्योत आवें।
- ❖ किसी कुएँ, बिल, देव मंदिर, शमशान व गलत मार्ग भें पड़ने वाले वृक्ष के नीचे उगने वाली गली-सड़ी जड़ी या औषधि नहीं लेनी चाहिए।
- ❖ स्थान साफ हो और मनमोहक वन में उगी जड़ी ही तंत्र में प्रयोग करें।
- ❖ जड़ी या औषधि प्राप्त करने के लिए काष्ठ (लकड़ी) का शस्त्र ही प्रयोग करें।
- ❖ जड़ी या औषधि लाने के समय किसी व्यक्ति से बातचीत न करें और न ही पीछे पलटकर देखें।

❖ जड़ी या औषधि लाने के समय ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।

❖ घर जाकर जड़ी या औषधि को पृथ्वी पर न रखें और उसे दूध और गंगाजल से स्नान कराके किसी शुद्ध वस्त्र पर रखें।

❖ जड़ी या औषधि को छाया में ही सुखाना चाहिए, तदोपरान्त प्रयोग करें।

❖ जड़ी या औषधि को निमन्त्रण देते समय और घर लाते समय, उस पर अपनी परछाई न पड़ने दें।

❖ जड़ी या औषधि रवि पुष्य योग, गुरु पुष्य योग, शनि पुष्य योग और स्वार्थ सिद्धि योग में ही प्राप्त करें।

❖ 'ब्रह्म मुहूर्त' किसी भी जड़ी या औषधि को प्राप्त करने का उपयुक्त समय होता है। अतः इसी समय जड़ी प्राप्त करें।

## जड़ी या औषधि निमन्त्रण विधि

यह स्मरण रखना चाहिए जब कोई जड़ी अथवा औषधि प्रयोग में लानी हो, उसको पहले दिन जाकर नमस्कार करें।

**अथ मन्त्र–ओं नमस्तेऽमृत सम्पभूते बल वीर्य विवर्द्धिनी।**
**बल मायुश्च में देहि पापन्मे त्राहि दूरतः॥**

तत्पश्चात जड़ी की जड़ के समीप बैठकर, जल-चावल आदि छिड़क कर निम्न मन्त्र उच्चारण करें, जिससे उस पौधे के निकट जो क्रूरात्माएँ हैं, वे दूर भाग जाएँ।

**ओं वेतालाश्य पिशाचाश्य राक्षसाश्च सरीसृपां।**
**अपसर्पन्तु ते सर्वे वृक्षादिस्माच्छिवाज्ञर्या॥**

यह मन्त्र जपने के पश्चात उस जड़ी का विधिवत पूजन करें। धूप जलाकर जड़ी की जड़ के पास-चावल, हल्दी, कोई सिक्का (मुद्रा), मौली, श्वेत सरसों, सिंदूर और मिष्ठान रख कर पौधे के तने पर अथवा पौधे का जो भाग वाञ्छित हो उस पर मौली (कलावा) बांध दें। पौधे की जड़ को जल से पूरी तरह सींच दे अर्थात् जलार्पण करें।

पुनः पौधे को नमस्कार करते हुए कहे—**'हे 'अमुक' पेड़ अथवा औषधि, मैं आपको अपने (अमुक) कार्य के लिए प्राप्त करना चाहता हूँ। अतः आप मेरा यह कार्य सफल करें।'**

ऐसा प्रयोग कर घर चला आए।

## जड़ी या औषधि खोदने की विधि

पहले आमन्त्रित की हुई जड़ी या औषधि के पास दूसरे दिन ब्रह्म-मुहूर्त में पहुँच कर, पूर्वाभिमुख होकर नमस्कार करें। नमस्कार करते समय नमस्कार मन्त्र और जड़ी खोदने का मन्त्र उच्चारण करें।

### नमस्कार मंत्र

**ओं नमस्तेऽमृत सम्भूते बल वीर्य विवर्द्धिनी।**
**बल मायुश्च मे देहि पापान्मे त्राहि दूरतः॥**

### खोदने का मंत्र

**येन त्वां खनते ब्रह्म, येन त्वां खनते भृगु।**
**येन हीन्दोऽय वरुणो, येन त्वामुपचक्रमे।**

**तेनाहं खनिष्यामि मन्त्रपूतेन पाणिना।**
**मा पातेमानि पतित जोन्यथा माते भवेत्।**
**अत्रैव तिष्ठ कल्याणि मम कार्यकरी भव।**
**मम कार्ये सिद्धे ततः स्वर्ग गमिष्यमि।**

जड़ी खोदने का मन्त्र तब तक उच्चारण करें जब तक जड़ी उखाड़ नहीं ली जाती। उस जड़ी से यह भी कहें कि हे 'अमुक' जड़ी मेरा कार्य सफल करने के लिए आप मेरे साथ चलें। तत्पश्चात् जड़ी उखाड़ कर, किसी से बिना बोले घर ले जाए और जड़ी को स्नानादि करा कर किसी शुद्ध वस्त्र पर सूखने के लिए छाया में रख दें। सूखने पर अभीष्ट तन्त्र प्रयोग में इस जड़ी का प्रयोग करने से आप मनोवाञ्छित सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

## श्वेत (सफेद) आक से गणपति जी की प्रतिमा की प्राप्ति

### श्वेत आक के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| **हिन्दी** | **आक तथा अकौडा** |
| **पंजाबी** | **देशी आक** |
| **उर्दू** | **मदार** |
| **संस्कृत** | **अर्क** |
| **गुजराती** | **आकडा** |

सफेद आक को मदार भी कहते हैं। यह पौधा प्रायः प्रत्येक स्थान में मिल जाता है। इसके ऊपर अप्रैल-मई के करीब सफेद फूल आते हैं।

सफेद आक के फूल सफेद दूध की तरह होते हैं। भारत में मदार (आक) तो बहुत तरह के पाये जाते हैं। इनमें अधिकतर नीले या कत्थई रंग के फूल का आक मिलता है। यह आक तन्त्र में कम ही प्रयोग होता है। तन्त्र शास्त्र में सफेद फूल वाला आक बहुत प्रयोग होता है।

सामान्य आक के पत्ते हरे होते हैं। परन्तु सफेद आक के पत्ते भी सफेद होते हैं। सफेद आक का पौधा 5 फुट चौड़ा तथा ऊँचा 7 फुट होता है। आक के कई पौधे इससे भी ऊँचे होते हैं।

तन्त्र में आक के बारे में यह धारणा है, कि श्वेत आक की जड़, जो कम से कम 27 वर्ष से ज्यादा पुरानी हो उसमें स्वतः ही गणेश जी की प्रतिमा बन जाती है। यह प्रकृति का एक आश्चर्य ही है। इस श्वेत आक की जड़ी (मूल) यदि खोदकर निकाल दी जाए तो नीचे से जड़ में गणपति जी की प्रतिमा प्राप्त होगी, इस प्रतिमा का पूजन करना महान कल्याणकारी है। यह प्रतिमा स्वतः सिद्ध होती है। तन्त्र शास्त्रों के अनुसार ऐसे घर में जहाँ यह प्रतिमा स्थापित हो, वहाँ ऋद्धि-सिद्धि तथा अन्नपूर्णा वास करती है।

यह गणपति की प्रतिमा ऋद्धि-सिद्धि की मालिक होती है। जिस व्यक्ति के घर में यह गणपति की प्रतिमा स्थापित होगी उस घर में लक्ष्मी जी का निवास होता है। तथा जहाँ यह प्रतिमा होगी उस स्थान में कोई भी शत्रु हानि नहीं पहुँचा सकता। इस प्रतिमा के सामने बैठकर गणपति जी का मूल मंत्र जपने से श्री गणपति जी के दर्शन होते हैं। यह श्वेत आक का पौधा गणपति जी का स्वरूप माना जाता है। जिस व्यक्ति के घर में यह श्वेत आक का पौधा होगा वहाँ पर कोई शत्रु हानि नहीं पहुँचा पाता।

यह भी कहा जाता है, कि जहाँ आक का पौधा होता है। वहाँ पर

सर्प भी निवास करता है तथा आक के पौधे की नीचे लक्ष्मी जी का भण्डार होता है।

प्राचीन समय में मंत्र सिद्ध की गई प्रतिमा को साधक लोग अपनी झोली में रखते थे फिर उस झोली में से जितना धन निकाला जाता था उतना ही धन झोली में स्वतः आ जाता था, यह शक्ति आज भी इस प्रतिमा को प्राप्त है।

जब आप को कहीं 27 वर्ष का श्वेत आक मिले तो उसके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करें। फिर शुभ समय विचारकर आक की जगह आदि साफ करें ताकि आक की जड़ के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त हो सके, तब फिर दूसरे दिन रात्रि को आक को न्योत आयें, तब प्रातःकाल के समय आक के स्थान पर जाकर धैर्य तथा सावधानी से मिट्टी खोदनी चाहिए, जब पूरा पेड़ उखाड़े, तब आक के पेड़ की सभी जड़ों को एकत्र करके अपने घर में कहीं साफ स्थान पर रख दें ताकि जड़ों की मिट्टी आदि दूर हो जाये फिर हफ्ते के बाद इस आक की सबसे नीचे की जड़ को देखें तो आपको गणपति जी की प्रतिमा प्राप्त होगी। इस तरह की प्रतिमा प्राप्त करके प्रतिमा को दूध से स्नान करा के घर में मन्त्र सिद्ध प्रतिमा स्थापित करें तथा नित्य इस प्रतिमा को धूप दीप करें, साथ ही गणपति जी का मूल मंत्र का जाप करें।

हमने 35 साल के श्वेत आक को खोदकर एक फुट लम्बी गणपति जी की प्रतिमा प्राप्त की, जिस का चित्र नं० 1 इस किताब में दिया है।

श्वेत आक को खोदते समय सावधान रहें, कि आक के नीचे सर्प भी हो सकता है। आक खोदने के पहले साँप कील करके साँप को दूर करें।

सर्प गणपति की प्रतिमा के आस-पास होता है। मेरे अनुसार आक

की जड़ के आस-पास मिट्टी रेतीली नरम होती है। इसलिए जड़ में सर्प निवास करता है।

तन्त्र शास्त्र के अनुसार सर्प गणपति जी की प्रतिमा की रक्षा करता है।

श्वेत आक से गणपति जी की प्रतिमा जनवरी से मार्च तक प्राप्त करें। यह समय मेरे अनुसार ठीक समय है।

जो आक हमारे द्वारा खोदा गया उसकी जड़ 12 फुट नीचे से निकाली तथा आस-पास 4 फुट चौड़ा गड्ढा खोदा तथा जो इस 35 साल के आक की मूल (जड़) आदमी की कमर की तरह मोटी निकाली।

आक खोदने के लिए कुदाल का प्रयोग करें, यह काम सावधानी का है। सोच समझ कर ही यह प्रतिमा प्राप्त करें।

सफेद आक के गणपति की प्रतिमा अत्यन्त दुर्लभ मानी जाती है। इसके बारे में कहा जाता है कि जिसके घर में सफेद आक के गणपति की प्रतिमा स्थापित होती है। उसके घर में किसी प्रकार का कोई अभाव या न्यूनता नहीं रहती।

## श्वेत गणपति की प्रतिमा मनोकामना के लिए

### मंत्र—ओं अंतिरिक्षाय स्वाहा

**विधि**—श्वेत आक की गणपति की प्रतिमा अपने पूजा स्थान में स्थापित करें (नोट—गणपति की प्रतिमा पूर्व दिशा की तरफ ही स्थापित करें) नित्य ऊपर दिये मंत्र का 21 दिन में सवा लाख जप करें जप के लिए लाल रंग का आसन प्रयोग करें तथा श्वेत आक की जड़ की माला से यह जप करें तो जप काल में ही साधक की हर मनोकामना गणपति जी पूरी करते हैं। यह मेरा सिद्ध प्रयोग है।

## श्वेत आक के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| हिन्दी | आक तथा अकौडा |
| पंजाबी | देशी आक |
| उर्दू | मदार |
| संस्कृत | अर्क |
| गुजराती | आकडा |

श्वेत आक की प्राप्ति बहुत दुर्लभ है। यह मिलता तो प्रायः भारत के सभी प्रदेशों में है, परन्तु बहुत कम मात्रा में। आक के अन्य पौधे जिनके फूल, गुलाबी-नीली आभा लिए होते हैं। हर स्थान पर सुलभ हैं। परन्तु श्वेत आक दुष्प्राप्य है। इस पौधे की ऊंचाई 6-7 फुट, और झाड़ 4-5 फुट, सब तरफ फैला होता है। कहीं-कहीं इसका विस्तार इससे भी अधिक होता है। इसकी मोटी टहनियाँ, बरगद के पेड़ जैसे पत्ते, गुच्छेदार सफेद दूध जैसे फूल और अलसी के बीजों जैसे बीज होते हैं।

श्वेत आक की पहचान के लिए चित्र नं० 2 देखें। इस आक को तन्त्र शास्त्र में दिव्य औषधि माना जाता है। और इसका दूध सफेद, जो बहुत विषैला होता है।

## तन्त्र शास्त्र में श्वेत आक को दिव्य औषधि माना है

तन्त्र शास्त्र में श्वेत आक को दिव्य औषधि माना जाता है। उदाहरण के लिए, आक के दूध को बारह पहर तक गाय के घी में खरल करना चाहिए। यह घी यदि एक रत्ती लेकर मूत्रेन्द्रिय पर मालिश करें तो हस्त मैथुन द्वारा पैदा नपुंसकता मिट जाती है।

## श्वेत आक के द्वारा वशीकरण प्रयोग

रवि पुष्य नक्षत्र में, श्वेत आक की जड़ विधि सहित प्राप्त करें, इस जड़ को गोरोचन तथा गाय के घी के साथ पीसकर, लेप तैयार करें, इस लेप को गणपति के मूल मंत्र के द्वारा 101 बार अभिमन्त्रित कर, तिलक लगाने से त्रिलोक वश में हो जाता है।

## रक्षा के लिए श्वेत आक का प्रयोग

रवि पुष्य नक्षत्र में सफेद आक की जड़ गणपति के मूल मंत्र से 1001 बार अभिमन्त्रित करके धारण करने से भूत-प्रेत जिन्न आदि से रक्षा होती है। यह सिद्ध प्रयोग है।

## श्वेत आक की कील का प्रयोग

1. श्वेत आक की तीन अंगुल की कील बनाकर, कृतिका नक्षत्र में, तालाब में गाड़ने से तालाब की समस्त मछलियां मर जाती हैं।
2. कृत्तिका नक्षत्र में सफेद आक की जड़, सोलह अंगुल की लेकर, मदिरालय में गाड़ देने से, मदिरा का पानी सफेद हो जाता है। भाव यह कि मदिरा का मद खत्म हो जाता है।

## टोने-टोटके से सुरक्षित रहने का प्रयोग

श्वेत आक का पौधा विधि पूर्वक, घर के द्वार पर लगाने से टोना टोटका असर नहीं करता। इस तरह प्रयोग करने से घर सुरक्षित रहता है।

## सफेद आक से वशीकरण प्रयोग

सफेद आक की जड़ को पीसकर, उसमें अपना वीर्य मिलाकर माथे पर तिलक लगाने से प्रबल शत्रु भी मित्र हो जाता है।

## बवासीर दूर करने के लिए

शनिवार पुष्य नक्षत्र को प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व, आक के सात पत्ते तोड़ लायें और शौच क्रिया से निवृत्त होकर, गुदा को जल से धोकर, एक-एक पत्ते से क्रमशः गुदा को रगड़ या पोंछकर, अपने शरीर के दक्षिण दिशा की ओर इन पत्तों को फेंकता जाये।

इसी क्रिया को इक्कीस दिन तक करें तो, बवासीर की जलन तथा सूजन आदि सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। मेरे द्वारा कही गई विधि का प्रयोग करके लाभ प्राप्त करें।

## फील पाव को नष्ट करने के लिए

फील पाँव का रोग अण्डकोष से होकर पैरों को सुजाकर मोटा कर देता है। फील पाँव को दूर करने के लिए यह प्रयोग करें।

रविवार पुष्य नक्षत्र में उत्तर दिशा में पैदा हुए श्वेत आक के पौधे की जड़, तान्त्रिक विधि सहित उखाड़कर, सूती लाल रंग के धागे में लपेटकर, फील पाँव के रोग के स्थान पर धारण करने से फील पाँव शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। यह सिद्ध योग है।

## श्वेत आक से सन्तान प्राप्ति के लिए प्रयोग

श्वेत आक की जड़ रवि पुष्य नक्षत्र में विधि सहित प्राप्त करें, फिर उसी समय इस जड़ को साफ करके धूप आदि देकर गणपति के मूल

मंत्र से 21000 बार जप करके अभिमन्त्रित कर, हवन आदि करें, तो यह जड़ सिद्ध हो जाती है। फिर इस जड़ को बन्ध्या स्त्री की कमर में बाँध देने से सन्तान की प्राप्ति होती है। यह मेरा सिद्ध प्रयोग है।

## वशीकरण तिलक

श्वेत आक की जड़ को काली बकरी के मूल में घिसकर माथे पर तिलक करें तो देखने वाले वशीभूत हो जाते हैं। यह तन्त्र रवि पुष्य नक्षत्र में ही प्रयोग करें।

श्वेत आक की कलम से गणपति जी के यंत्र-मंत्र लिख़कर धारण क़रने से, गणपति जी साधक की मनोकामना की पूर्ति करते हैं।

## श्वेत आक नजर दूर करने के लिए

जब किसी बच्चे को नजर लगी हो तो उसे दूर करने के लिए, उस बच्चे को श्वेत आक की माला बनाकर पहनाने पर नजर का कुप्रभाव समाप्त हो जाता है।

## श्वेत आक से मोहिनी काजल

रविवार को पुष्य नक्षत्र में प्रातः के समय, श्वेत आक की जड़ विधि से ले आयें और जड़ को साफ करके भेड़ के ताजे खून में भली प्रकार से पीसकर, इसको रुई के साथ बत्ती बनायें और इसको दीपक में डालकर काजल तैयार करें; इस अद्भुत मोहिनी काजल को गणपति जी के मूल मंत्र से 21000 बार अभिमन्त्रित करके अपनी आँखों में लगाकर जिस युवती की अभिलाषा करते हुए उसके पास जायें, वही मोहित होकर सेज पर हाजिर होगी।

## अग्नि-दुर्घटना दूर करने के लिए

श्वेत आक की जड़ गणपति के मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने पास रखने से अग्नि से दुर्घटना की आशंका नहीं रहती।

## श्वेत आक से वीर्य स्तम्भन

श्वेत आक की जड़ रवि पुष्य योग में प्राप्त करके, गणपति जी के मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करके कमर में बाँध कर संभोग करने से वीर्य स्तम्भन होता है।

## श्वेत आक मक्खियों को दूर करने के लिए

मघा नक्षत्र में श्वेत आक की जड़ को लाकर, यष्टि मधु के साथ मिलाकर, घर या खेत में रख देने से, शस्य नाशक हर तरह की मक्खियों और चूहों आदि का मुख बन्धन हो जाता है। यह योग डामर तन्त्र का है।

## ज्वर नाश के लिए

रवि पुष्य योग में आक की जड़ उखाड़कर कान में बाँधने से, अनेक प्रकार के ज्वरों का नाश होता है। यह प्रयोग प्रातःकाल के समय बिना कसी व्यक्ति के टोके करें। इस प्रयोग में जड़ को गणपति के मूल मंत्र से अभिमन्त्रित कर, प्रयोग करें।

## नेत्र रोग दूर करने के लिए

जिस नेत्र में पीड़ा हो, उसके विपरीत पैर के अंगूठे पर श्वेत आक

के दूध से तर किया रूई का फाया रखने से नेत्र पीड़ा दूर होती है।

## आक से भविष्यवाणी

जब आक के वृक्ष पर पुष्प अधिक आते हैं, तब सोने की कीमत में कमी आती है।

# अपामार्ग (पुठकंडा)

### अपामार्ग के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | अपामार्ग |
| हिन्दी | चिरचिटा |
| पंजावी | पुठकंडा |
| बंगाली | अपाग |
| मराठी | अघाडा |
| अंग्रेजी | रुफचेफ्ट्री |
| फारसी | नारवासगोना |
| अरबी | अंकर |

चिरचिटा एक प्रसिद्ध झाड़ीदार जड़ी है, जो प्रायः बंजर और रेतीले तथा खाली स्थानों पर होती है और भारत में प्रायः सभी प्रदेशों में प्राप्त हो जाती है। इसके पत्ते गुलाबी, हल्का लाल नीला-रंग लिए होते हैं और लम्बी पतली दुम पर बहुत बारीक फूल और ऊपर से नीचे मुख किये, कुसुम्भी जैसे बीज लगते हैं।

इसकी पहचान के लिए देखें चित्र नं० 3 चिरचिटा दस्तावर, चरपरा, अजीर्ण नाशक और पुष्टि कारक है। इसकी दातुन दाँत दर्द दूर करती है और नसवार सिर के कीड़े मारती है। इसकी तासीर सर्द खुश्क है।

## कण्ठ माला को दूर करने के लिए

लाल अपामार्ग की तरोताजा पत्तियों की माला प्रतिदिन पहनने से कण्ठ माला रोग समाप्त हो जाता है।

## ज्वर नाश के लिए

चिरचिटा पौधे की जड़ को उखाड़ करके सूती धागे में 7 बार लपेट कर रविवार के दिन हाथ में बाँध देने से विषम ज्वर का नाश होता है।

## बिच्छू का विष नाश करने के लिए

चिरचिटा की जड़ को बिच्छू द्वारा काटे गये व्यक्ति को 7 बार दिखा देने, अथवा काटे गये स्थान पर छुआ देने मात्र से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

## दमा दूर करने के लिए

कार्तिक पूर्णिमा के दिन अपामार्ग के बीच आना भर लेकर उन्हें भली प्रकार साफ कर लें तत्पश्चात एक पाव गौ के दूध में औटा करके खीर तैयार करें। रात को खुले स्थान पर चन्द्रमा की चाँदनी में अर्थात् ओस में रखं दें।

तब दूसरे दिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व इस खीर का सेवन करने से दमारोग से छुटकारा मिल जाता है।

## प्रसव के लिए

प्रसव के लिए अपामार्ग की चार अंगुल जड़ लाकर गर्भिणी नारी की योनि में प्रविष्ट कराने से तत्काल प्रसव हो जाता है। याह डामर तन्त्र का सिद्ध प्रयोग है।

## वशीकरण के लिये

1. अपामार्ग की जड़ उखाड़कर उसकी कील बनाकर उसे 7 बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में फेंक दिया जाये वह व्यक्ति वश में हो जाता है।

**मन्त्र—ओं मदन कामदेवाय फट् स्वाहा**

इस मन्त्र को पहले 41000 बार जप करके सिद्ध करने के बाद ही प्रयोग में लाएँ।

2. अपामर्ग की जड़ का कपाल में तिलक लगाने से भी वशीकरण होता है। यह भी ड़ामर तन्त्र का सिद्ध प्रयोग है।

## वशीकरण तिलक

अपामार्ग की जड़ और गोरोचन को इकट्ठा पीसकर कपाल पर तिलक लगाने से तीनों लोक वशीभूत होते हैं। यह भी प्रयोग ऊपर कहे मंत्र से अभिमन्त्रित करके प्रयोग करें।

## वेश्या वशीकरण के लिये

अपामार्ग पौधे के मध्य भाग की चार अंगुल परिमाण की लकड़ी लेकर उसे निम्न मन्त्र से 7 बार अभिमन्त्रित करके वेश्या के घर में फेंक देने

से वेश्या वशीभूत हो जाती है। यह डामर तन्त्र का सिद्ध प्रयोग है।

## मोहिनी काजल

**मन्त्र**

**ओं नमः पदमनी**
**अंजन मेरा नाम**
**इस नगरी में बैठके**
**मोहूं सगरा गाम**
**राज करन्ता राजा मोहूँ**
**फर्श पे बैठा बनिया मोहूँ**
**मोहूँ पनघट की पनिहार**
**इस नगर की छत्तीस**
**मोहूँ पवन बयार**
**जो कोई मार।**
**मार करन्ता आवे**
**ताही नरसिंह वीर**
**बांया पग के अंगूठा**
**तेल धर गेर लावे**
**मेरी भक्ति**
**गुरु की शक्ति**
**फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा**

**विधि**—अपामार्ग की टहनी लेकर, उस पर रुई लपेट कर बत्ती बनाकर एक मिट्टी के दीपक में चमेली का तेल डालकर जलायें। इसका काजल एकत्र करें, जब तक यह काजल की क्रिया चलती रहे तब तक इस मंत्र का जप करें।

जब आपने काजल का प्रयोग करना हो, तब 101 बार इस मन्त्र से काजल को अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री के पास काजल लगाकर जाये तो वह स्त्री दासी की तरह साधक का कार्य करेगी। यह सिद्ध प्रयोग है।

## बारह सींगा

बारह सींगा को सभी भाषाओं में बारह सींगा ही कहते हैं, जो प्रायः पंसारियों की दुकानों से मिल जाता है। यह अपने नाम से ही पहचाना जाता है। तथा सर्वत्र उपलब्ध भी है।

इसकी पहचान के लिए इस पुस्तक का चित्र नं० 4 देखें। बारह सींगा का प्रयोग कभी तन्त्र शास्त्र में बहुत होता हैं। यह गर्भ तीक्ष्ण गुण रखता है, जो वात रोग में प्रायः प्रयोग होता है।

### सर्प दूर करने के लिए

बारह सींगा के सींग को रविवार पुष्य नक्षत्र में ताबीज बनाकर पहने तो सर्प के काटने का खतरा नहीं होता।

### मच्छर आदि को दूर करने के लिए

बारह सिंगा घर में स्थापित करने से सर्प तथा कृमि-खटमल घर छोड़कर भाग जाते हैं। यह प्रयोग रवि पुष्य नक्षत्र में ही करें। यह हमारा सिद्ध प्रयोग है।

### सर्प दूर करने के लिए

बाहर सींगा का सींग धूप की तरह प्रयोग करने से सर्प दूर हो जाते हैं।

## दर्द दूर करने के लिए

बाहर सींगा का सींग लेकर उसकी भस्म बनाकर, प्रयोग करने से (खाने से) कमर का दर्द दूर हो जाता है।

## प्रसव के लिए

प्रसव काल के समय में महिला के स्तनों पर बारह सींगा का सींग बाँध देने से बिना कष्ट के शीघ्र ही प्रसव हो जाता है।

# चमेली

### चमेली के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | उपजाती |
| हिन्दी | चमेली |
| बंगाली | चामिली |
| मराठी | चमेली |
| अंग्रेजी | सैपनिशि-जासमीने |
| फारसी | यसमौन |
| अरबी | यासमौन |
| पंजाबी | चवेली |

चमेली का पौधा बेल जैसा होता है, जो बाग बगीचों में आम पाया जाता है। इसका फूल लम्बी डण्डी पर लगता है। जिसका रंग श्‍वेत और सुगन्ध बहुत मधुर होती है। इसके पत्ते कुछ गोल, हरे और चिकने होते हैं। यह पौधा भारत में प्रायः हर स्थान पर पाया जाता है अर्थात सहज प्राप्य है।

इसकी पहचान के लिए इस पुस्तक का चित्र नं० 5 देखें। चमेली का तेल सुगन्धित और ठण्डा होता है, तथा स्वाद कड़वा। चमेली कई रोगों को शान्त करती है, जैसे—मुख रोग, दांत रोग, घाव, कुष्ठ, रक्त विकार, शिर रोग, आँख रोग, त्वचा रोग, लकवा, अधरंग और गठिया आदि।

## शत्रु मुख स्तम्भन के लिए

1. रवि पुष्य नक्षत्र में चमेली की जड़ लेकर कण्ठ में धारण करने से सुरक्षा होती हैं
2. यदि इस जड़ को मुख में धारण किया जाए तो शत्रु का मुख स्तम्भन हो जाता है।

## शत्रु पराजित करने के लिए

पुष्य नक्षत्र में लायी गई चमेली की जड़ को ताबीज में डालकर धारण करने से शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

## धोबी के वस्त्र नाश (विनष्ट) करने के लिएं

चमेली की लकड़ी की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में निम्नलिखित मन्त्र से 108 बार अभिमन्त्रित करके धोबी के घर में गाड़ने से उसके सभी वस्त्र विनष्ट हो जाते हैं।

## उल्लू (उलूक)

उल्लू एक पक्षी है। जो भारत में सभी स्थानों पर पाया जाता है।

इसका कद दरमियाना, पंख मटमैले, आँखें और सिर गोल और आँखें लाल होती है। यह रात्रिचर पक्षी है, और इसे लक्ष्मी वाहन भी कहते हैं।

इस पक्षी के पंखों की पहचान के लिए इस पुस्तक का चित्र नं० 6 देखें।

उल्लू पर प्रयोगों का विस्तार पूर्वक वर्णन मैं अपनी 'उलूक तन्त्र' नामक पुस्तक में चित्रों सहित प्रस्तुत करूँगा, यहाँ उल्लू के पंखों का प्रयोग कहा गया है।

## उल्लू की पूँछ के पंख सफलता के लिए

1. उल्लू की पूँछ के पंखों (परों) को किसी भी हिन्दी महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी, दशमी तथा अमावस्या को विधि सहित लायें। और उनको धूप आदि दे करके ताबीज में बन्दर करके अपने दाँयें हाथ पर बाँधें तो हर प्रकार के कारोबार में आशा से अधिक लाभ (सफलता) मिले। यह सिद्ध प्रयोग है।
2. यदि कोई व्यक्ति उल्लू की पूंछ के परों को धूप की लकड़ी की आग में जलाकर के राख बना करके उस राख को अपने मस्तक पर लगाये तो कारोबार में मालामाल होये।

## उल्लू के पंखों से मोहन प्रयोग

किसी भी महीने की सप्तमी, नवमी, पूर्णिमा को प्रातःकाल के समय उल्लू के सिर के पंखों को लेकर सोने के ताबीज में डालकर अपने दाहिने हाथ पर बांध ले तो साधक जिस स्त्री को देखेगा वह मोहित हो जाएगी।

## उल्लू के पंखों से ज्ञान की प्राप्ति

कार्तिक के पहले पक्ष की पूर्णमासी के दिन ब्रह्म मुहूर्त उल्लू के पेट के परों को लाकर सोने के ताबीज में डालकर आदमीअपने दाहिने हाथ पर बाँध ले, पर औरत अपने बाँये हाथ पर बाँधे तो उत्तम ज्ञान की प्राप्ति होती है।

## तैरने के लिए उल्लू का पंख

उल्लू के पंख और खाल रवि पुष्य नक्षत्र में प्राप्त करके एक लाल रंग के कपड़े में बाँधें और तैरने के पहले इस कपड़े को कमर में बाँध लें तो चाहे कितना ही बड़ा दरिया क्यों न हो बिना थकावट के पार हो जायेगा।

## वशीकरण के लिए

उल्लू सिद्ध करके उल्लू के बाँए पंख को तोड़कर इस पंख का चरा करके, इस पंख को किसी भी व्यक्ति को खाने-पीने वाली वस्तु में मिलाकर खिला दें तो वह व्यक्ति गुलाम हो जाता है जिस पर यह प्रयोग किया गया है।

## दुष्ट ग्रह नाशक मन्त्र

उल्लू के पंख तथा पूँछ को **'ओं नमोः कालरात्रि'** मन्त्र द्वारा 21 बार अभिमन्त्रित करके अपनी दाँई भुजा में बाँधने से दुष्ट ग्रहों का प्रभाव शान्त हो जाता है।

## मिर्गी दूर करने के लिए

उल्लू के ग्यारह पंखों को एक-एक करके जलायें और इन पंखों के

धुंए को एक नये सफेद कपड़े के टुकड़े में एकत्रित कर लें, तत्पश्चात उस कपड़े की बत्ती बनाकर शनिवार के दिन प्रातः दाहिने हाथ में और रोगी महिला हो तो बाँये हाथ में पट्टी बाँध देने से मिर्गी दूर हो जाती है। यह सिद्ध प्रयोग है।

## घर सूना करने के लिए

उल्लू के तीन पंखों को अपने बाँये हाथ में लेकर पूर्वोक्त **'ओं नमो कालरात्रि'** मन्त्र से 1008 बार अभिमंत्रित करके जिस व्यक्ति के घर में कालरात्रि को डाल दें तो वह घर शीघ्र ही सूना हो जाता है।

## अदृश्याजन के लिए

मंगलवार के दिन उल्लू के पंख जलाकर उसमें बराबर भाग, कुंकुम और कस्तूरी मिलाकर पूर्वोक्त मंत्र से 1008 बार अभिमन्त्रित करके एक गुटिका तैयार कर लें, फिर इस गुटिका को आँखों में आँजने से अदृश्यीकरण शक्ति प्राप्त होती है।

## उल्लू के पंखों से मोहन प्रयोग

किसी भी महीने के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को आधी रात के समय उल्लू की गर्दन के निचले हिस्से से पाँच पंख नोंच लें, फिर उसी मास की पूर्णिमा को आधी रात के समय स्नान करके बहती हुई नदी के तट पर जाकर गीले वस्त्रों से ही नदी के तट पर बैठकर पंखों को इस मंत्र से जल पढ़कर 1008 बार पंखों पर छींटे मारने से पंख अभिमंत्रित हो जायेंगे। उक्त प्रयोग जब पूरा हो जाये तब इन पंखों को साफ कपड़े में लपेटकर घर चला आये, फिर अगले मंगलवार या शनिवार के दिन इन

पंखों को सोने के ताबीज में डालकर पीले रंग का रेशमी डोरा ताबीज में डालकर दायीं भुजा में धारण करने से मोहिनी शक्ति की प्राप्ति होती है।

**मंत्र**

**ओं नमः उलूकाय।**
**नमः लक्ष्मी वाहनाय।**
**नमः शिवाय।**
**ओं जन मन।**
**मोहिनी शक्ति।**
**कामाक्षा देवी नमः**
**श्री फट् स्वाहा।**

## कलह कराने का यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८० | १२ | ८ | ८ |
| ५६ | ६४ | ७१ | ७४ |
| ६४ | १२ | ८ | ६७ |
| ४६ | ५५ | ५५ | ५७ |

इस यन्त्र को मंगल के दिन रवि पुष्य नक्षत्र में उल्लू के पंख से कुम्हार के आवे से निकले ठीकरे पर लिखें तथा विरोधी के घर में फेंकने से

कलह होती है।

## मूँज

मूँज को रामशर भी कहते हैं, जो सरकण्डे (सरवाहड़) के ऊपरी भाग दुंम (फूल) के निचले भाग की छाल होती है। सरकंडा प्रायः रेतीले प्रदेशों में, एक झाड़ (कास जैसा) के रूप में होता है, जिसकी ऊँचाई 5-6 फुट और घेरा 2-$2\frac{1}{2}$ फुट होता है। इसका झाड़ कई कानियों का समूह होता है।

मूँज की पहचान के लिए इस पुस्तक का चित्र नं० 7 देखें, मूँज तन्त्र शास्त्र में प्रयोग होती है, जो प्रायः सभी स्थानों पर सुलभ है।

### रक्षा के लिए

मूँज घर में रखने से रक्षा होती है।

### व्याधि नाश के लिए

मूँज को धारण करने से व्याधि का नाश होता है।

## श्वेत करवीर

### कनेर के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| **संस्कृत** | **श्वेत करवीर** |
| **हिन्दी** | **सफेद कनेर** |
| **बंगाली** | **करवी** |

| | |
|---|---|
| **मराठी** | **कानैर, (पाडरी, तावडी, पिवली)** |
| **गुजराती** | **कणेर** |
| **कर्णाटकी** | **वाकणलिगे** |
| **तैलंगी** | **कनेर चेटु** |
| **अंग्रेजी** | **स्वीट सकरुटिड** |
| **लैटिन** | **रीयओडोरम** |
| **फारसी** | **खर जेहरा** |
| **अरबी** | **समुल, हिमारद कली** |
| **नेपाली** | **कलेहरवां** |
| **पंजाबी** | **सफेद कनेर** |

सफेद कनेर घरों और बाग बगीचों में सजावट के लिए लगाया जाता है, जो प्रायः सभी स्थानों पर प्राप्त हो जाता है। कनेर कई प्रकार के पाये जाते हैं। जैसे–

(1) लाल कनेर
(2) गुलाबी कनेर
(3) श्वेत कनेर
(4) पीला कनेर
(5) काला कनेर (जो प्रायः दुर्लभ है)

यहाँ पर श्वेत कनेर का पहले वर्णन किया जाता है। श्वेत कनेर का पौधा 5-10 फुट ऊँचा होता है। इसके पत्ते लम्बे, चिकने और हरे रंग के होते हैं। इस पर श्वेत गुच्छेदार फूल लगते हैं। यह कनेर विषैला होता है, तथा इसका स्वाद कड़वा होता है।

श्वेत कनेर की पहचान के लिए देखें चित्र नं० 8 श्वेत कनेर कई रोगों का शमन करता है।

जैसे—प्रमेह, कुष्ठ, फोड़ा, रक्त विकार और बवासीर आदि। इसका गुण गर्म खुश्क है।

## श्वेत कनेर के फूल

श्वेत कनेर के फूल गौरी को चढ़ाने से गौरी अत्यधिक प्रसन्न होती है। इसलिए श्वेत कनेर के फूल (पुष्प) को गौरी पुष्प भी कहते हैं। इस पुष्प से गौरी माँ की पूजा करने से गौरी माँ शीघ्र प्रसन्न होकर मन चाहा वरदान देती हैं।

## श्वेत कनेर की कील

हस्त नक्षत्र में कनेर की जड़ की तीन अंगुल की कील लेकर, कुम्हार के घर में गाड़ देने से कुम्हार के द्वारा बनाए सभी बर्तन नष्ट हो जाते हैं।

## श्वेत कनेर की कलम आकर्षण के लिए आकर्षण मन्त्र

**ओं नमः आदिरुपाय अमुकस्य आकर्षण कुरु-कुरु स्वाहा**

**विधि**—इस मन्त्र को काले धतूरे के पत्तों के रस में गोरोचन मिलाकर भोजपत्र पर सफेद कनेर की कलम से लिखें, (पूरे नाम सहित लिखें) जिसका आकर्षण करना हो, और ताबीज में डालकर खैर की लकड़ी की आग पर तपायें तो एक हजार किलोमीटर दूर बैठे व्यक्ति को भी फौरन घर की याद आयेगी, उसे तब तक चैन नहीं मिलेगा ज़ब तक वह घर नहीं आ जाता।

# लाल करवीर

## लाल कनेर के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | रक्त करवीर |
| हिन्दी | लाल कनेर |
| पंजाबी | लाल कनेर |
| अंग्रेजी | स्वीट सकरुटिड |
| गुजराती | कनेर |
| तैलगी | कनेर लाल |

रक्त करवीर (लाल कनेर) भी प्रायः हर स्थान पर सुलभ है। इसके पत्तों, शाखाएं और झाड़ सफेद कनेर जैसा ही होता है, परन्तु फूल लाल कुछ गुलाबी आभा लिए होते हैं।

इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 9 देखें, इस कनेर को गणेश कुसुम और चण्डी कुसुम भी कहते हैं।

## लाल कनेर के पुष्प गणेश कुसुम

लाल कनेर को गणेश कुसुम भी कहते हैं, गणेश जी को लाल कनेर के फूल चढ़ाने से मनचाहा वरदान मिलता है।

## चण्डी कुसुम

लाल कनेर को ही चण्डी कुसुम भी कहते हैं, तथा लाल कनेर के पुष्प चण्डी को चढ़ाने से चण्डी शीघ्र ही प्रसन्न हो जाती हैं।

## लाल कनेर की कील

मृगशिरा नक्षत्र में लाल कनेर की कील 7 अंगुल लम्बी लेकर, निम्नलिखित मन्त्र से 101 बार अभिमन्त्रित करके, भूमि में दबा देने से वशीकरण होता है। अमुक के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम जपें जिसे आकर्षित करना है।

**मन्त्र—ओं अमुक हूँ हूँ स्वाहा।**

# कृष्ण करवीर

## कृष्ण कनेर के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | कृष्ण करबीर |
| हिन्दी | काला कनेर |
| पंजाबी | काला कनेर |
| गुजराती | कणेर |
| कर्णाटकी | वाकणलिंगे |
| नेपाली | कलेहखा |

काले कनेर का पौधा भी उक्त कनेरों जैसा होता है परन्तु काला कनेर बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है। इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 10 देखें, इस कनेर के गुण भी सफेद कनेर जैसे होते हैं। जैसे, विषैला और कड़वा आदि।

## काली कनेर के पुष्प

भगवती काली को चढ़ाने से शनि ग्रह की शान्ति होती है तथा भगवती काली शीघ्र प्रसन्न होती है।

## काले कनेर की जड़

काले कनेर की जड़ रवि पुष्य नक्षत्र में धारण करने से भूतादि दूर हो जाते हैं।

## मारण के लिये

मारण के हवन के लिए काले कनेर के पुष्प भी बहुत प्रभावकारी हैं।

### शूल के लिये यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | ४५ | ८ | ८४ |
| ३ | ५ | ७५ | 16 |
| ८७ | ३८ | ८ | २ |
| 9 | २ | ३६ | ७५ |

इस यन्त्र को कनेर के पत्ते पर स्याही से लिखें तथा दुश्मन का नाम लिखकर इस पत्ते को कील से छेदे तो शत्रु को शूल होता है।

## घोड़े की नाल

घोड़े की नाल से सभी व्यक्ति परिचित हैं। यह घोड़े के पैरों (खुरों) के नीचे अर्ध गोलाकार लोहे की होती है। जो उसके पैरों को घिसने से बचाती है। घोड़े की नाल का भी तन्त्र शास्त्र में प्रयोग होता है।

### लकवा दूर करने के लिये

किसी भी रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र के समय एकदम सम्पूर्ण काले घोड़े की नाल निकलवा कर उसकी अंगूठी या कड़ा बनवाकर रोगी को पहना देने से उसे जीवन भर लकवे (पक्षाघात) का प्रकोप पुनः न होगा।

### बाधा दूर करने के लिये

काले घोड़े की नाल अंगूठी शनि पुष्य योग में विधि सहित बनाकर पहने तो इस तरह प्रयोग करने से भाग्य की बाधा स्वतः ही दूर हो जाती है तथा हर कार्य में पूरी सफलता मिलती हैं।

### नोट

एक बार नोबल पुरस्कार विजेता नैलसबोर्न के मकान के बाहर घोड़े की नाल देख करके उसके एक मित्र को आश्चर्य हुआ और उसने नैलसबोर्न से पूछा–'क्या तुम भी अन्धविश्वास को मानने वाले व्यक्तियों में से हो ?'

नैलसबोर्न से रहा न गया उसने विनम्रता से उत्तर दिया–'मैं अन्धविश्वासी हूँ या नहीं, पर मैं टोटका को मानता हूँ या नहीं, इससे

कोई फर्क नहीं पड़ता, जब से यह घोड़े की नाल मेरे मकान के बाहर लगी है तबसे मुझे बहुत राहत है।

प्रायः बड़े-बड़े डाक्टर व सयाने लोगों के द्वारा किये गये उपायों से रोग से तुरन्त राहत मिल जाती है। यहाँ यह घटना इसलिए दी गई है, कि आप तन्त्र की पूरी गोपनीयता को समझ सकें।

## पथरी (अश्मरी) के लिये

पथरी के रोगी को काले घोड़े की नाल की अंगूठी पुष्य नक्षत्र में बनाकर दाहिने हाथ की बीच वाली अंगुली में धारण करने से, पथरी का दर्द दूर हो जाता है।

## ऊपरी शिकायत दूर करने के लिये

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल प्राप्त करके द्वार पर लटकाने से ऊपरी शिकायत दूर हो जाती है।

## शनि दूर करने के लिये

काले घोड़े की नाल की अंगूठी शनि पुष्य नक्षत्र में बनाकर पहनने से शनि ग्रह का दुष्ट प्रभाव दूर होता है।

## आकर्षण यन्त्र

यन्त्र

| अथावश्ययन्त्रम् ।<br>५७५ दुनदन ३६५६६६ |
|---|
| |

ऊपर दिये यन्त्र को घोड़े की नाल के ऊपर लिखकर, अग्नि में तपाने से 21 दिन में ही परदेश गया व्यक्ति घर आ जाता है। यह मेरा सिद्ध प्रयोग है। प्रयोग करने से पहले 100000 यन्त्र लिखकर, सिद्ध कर लेने के बाद ही इस प्रयोग को करना चाहिए।

## भोजपत्र

### भोजपत्र के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | भोजपत्र |
| हिन्दी | भोजपत्र |
| पंजाबी | भोजपत्र |
| गुजराती | भोजपत्र |
| अंग्रेजी | भोजपत्र |
| मराठी | भोजपत्र |
| कर्णाटकी | भोजपत्र |
| फारसी | भोजपत्र |
| अरबी | भोजपत्र |

भोजपत्र के बड़े-बड़े वृक्ष होते हैं, जो प्रायः हिमालय क्षेत्र में प्राप्त हो जाते हैं। भोजपत्र वास्तव में उस पेड़ की छाल होती हैं जिस पर प्राचीन काल में महर्षि ग्रन्थ लिखा करते थे। तन्त्र शास्त्र में इसका अधिकतर प्रयोग होता है अर्थात् ताबीज आदि लिखे जाते हैं, जो बहुत प्रभांवशाली और सफल होते हैं। भोजपत्र पंसारी की दुकान से मिल जाता है। इसकी

पहचान के लिए देखें चित्र नं० 12।

## भोजपत्र रक्षा के लिये

भोजपत्र को ताबीज में, इष्ट देव का मंत्र लिखकर धारण करने से सभी बाधाएँ शान्त हो जाती हैं।

## भोजपत्र की धूप

भूत-प्रेत आदि की पीड़ा दूर करने के लिए भोजपत्र की धूप लाभकारी है।

## आधा शीशी दूर करने के लिये

**यन्त्र**

| | |
|---|---|
| ५३ | ४२ |
| ३११ | ७० |

इस यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर मस्तक पर बांधने से आधा शीशी दूर होती है।

# अनार

## अनार के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | दाड़िम |
| तैलंगी | डानिबचेटू |
| अंग्रेजी | पमग्रानेट |
| फारसी | अनार |
| अरबी | रुम्मान |
| पंजाबी | अनार |
| कर्णाटकी | दालिंब |
| गुजराती | दाड़यम |
| बंगाली | दाड़िम |
| मराठी | दालिंब |
| लैटन | पयुनिकाग्रानेटम्म |
| तामिली | मदालेई चेह्रेडी |
| नैपाली, पहाड़ी | धालेंदाड़िम |

अनार एक प्रसिद्ध फलदार पौधा है, जो प्रायः सर्वत्र सुलभ है। यह प्रायः मध्यम कद का पौधा है, जिसकी ऊँचाई 7-8 फुट होती है। इसके पत्ते हरे होते हैं और फूल गाढ़े लाल (अनारी रंग) के होते हैं। अनार के फूल फरवरी के महीने में निकलते हैं और अति मनमोहक होते हैं। फूल के पश्चात फल लगते हैं, जो प्रायः अगस्त सितम्बर में पक जाते हैं अनार

के फल के भीतर कुछ श्वेत गुलाबी रंग के दाने होते हैं जो खाने में खट्टे-मीठे और अति स्वादिष्ट होते हैं। अनार दो प्रकार का होता है, एक मीठा और दूसरा खट्टा-मीठा। अनार कई रोगों में लाभकारी हैं, जैसे—अफारा दूर करना, पेशाब आना, प्यास बुझाना और जिगर को ताकत देना आदि। मीठा अनार सर्द-खुश्क होता है। इसका अर्क और छाल पित्त-दस्त दूर करते हैं और जिगर व मेदा की गर्मी दूर करते हैं तथा कै दूर करते हैं। खट्टा-मीठा अनार, मेदा और जिगर को ताकत देता है और इसका पानी निचोड़कर पीने से रक्त-पित्त दस्त और हिचकी दूर होती है। इसका गुण सर्द-तर है। अनार के छिलके को नसपाल करते हैं। इसकी पहचान के लिए देखें चित्र नं. 13।

## अनार का बांदा

अनार के बांदा को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में घर में स्थापित या धारण करें तो धन भरपूर रहता है।

## अनार का बांदा

ज्येष्ठा नक्षत्र में अनार का बांदा प्राप्त करके घर के दरवाजे के ऊपर स्थापित कर देने पर भूत-प्रेत आदि घर में प्रवेश नहीं करते।

## पति वशीकरण के लिये

अनार के वृक्ष की जड़, छाल, पत्तों को लेकर श्वेत सर्षप सहित पीसकर निम्नलिखित मंत्र से 101 बार अभिमन्त्रित करके यदि नारी अपने अंगों में लेपन करके पति के पास जाये तो पति दास की तरह रहेगा। डामर तन्त्र से।

**मन्त्र—ओं मदन कामदेवाय फट् स्वाहा**

## सन्तान के लिये

अनार के पेड़ की जड़ को दूध के साथ सिद्ध करके उसमें घी मिलाकर तदनन्तर ऋतुकाल में इस औषधि का सेवन करने से तथा तदुपरान्त पति के साथ सहवास करने से मृतवत्सा नारी के सन्तान जन्म लेती है, जो दीर्घजीवी होंती है (डामर)।

°

## ग्रहदोष दूर करने के लिए

ज्येष्ठा नक्षत्र में अनार का बांदा लेकर बालक के ग्रह द्वार पर बाँध देने से उसके सब प्रकार के ग्रहदोष शान्त हो जाते हैं।

## कान दर्द दूर करने का यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६३ | २६ | ६६ | १८ |
| ३६ | ४८ | ३४ | ८४ |
| ६३ | ११ | ३२ | ६१ |
| ३४ | ४२ | ५६ | ५७ |

इस यन्त्र को अनार के रस से कागज पर लिखकर यदि कान पर बाँधे तो कान का दर्द दूर होता है।

## कृष्ण काला गुलाब

### गुलाब के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | तरुणी, कुबजक |
| हिन्दी | सेवती, कूजा, गुलाब |
| बंगाली | सेवती गोपाल |
| मराठी | गुलावां चफूल |
| अंग्रेजी | कैबज रोज |
| फारसी | गुल गुल सुर्खगुल मुश्क |
| अरबी | वर्द अहम्मर, जरंजवीन, मऊल वर्द |
| नेपाली | गुलाप फूल |
| पहाड़ी | गुलाप फूल |

गुलाब का पौधा हर प्रदेश में, बाग बगीचों में सजावट और सुगन्ध के लिए लगाया जाता है। इसके पत्ते हरे, टहनियाँ काँटेदार और फूल प्रायः लाल-गुलाबी होते हैं। इसका झाड़ 4-5 फुट ऊँचा होता है।

पहचान के लिए चित्र नं० 14 देखें। गुलाब भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। जैसे--लाल, श्वेत, पीला और काला आदि। यहाँ केवल काले गुलाब का ही वर्णन किया जायेगा जिसका चित्र ऊपर बताया गया है।

# तान्त्रिक जड़ी बूटी दर्शन

## चित्र दर्शन

## Photo Album

चित्र संख्या 1 से 51 तक

लेखक : योगीराज अवतार सिंह अटवाल

मो. : 09463014704
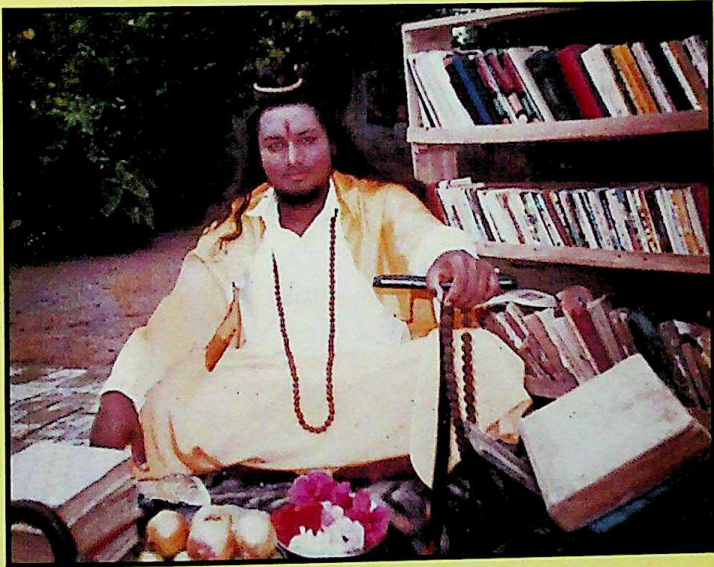
प्रकाशक : रणधीर प्रकाशन हरिद्वार
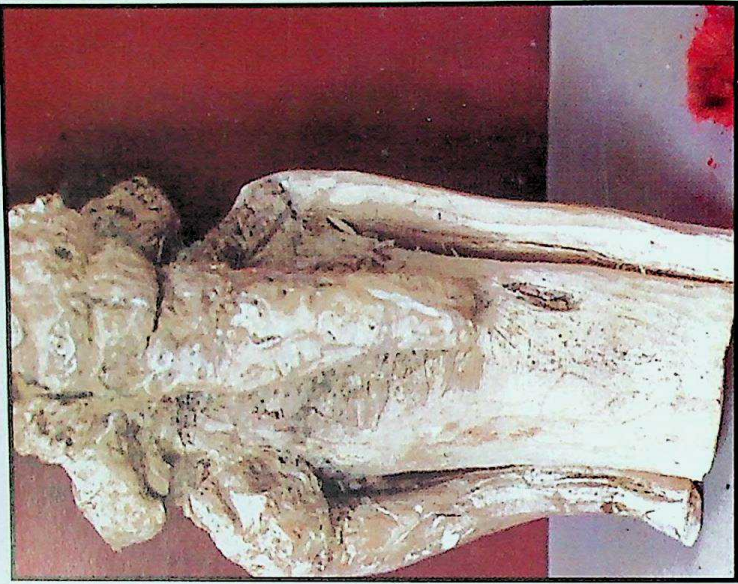
चित्र–1 श्वेतार्क गणपति

चित्र–2 श्वेतार्क का पौधा

चित्र-3 अपामार्ग (चिरचिटा)
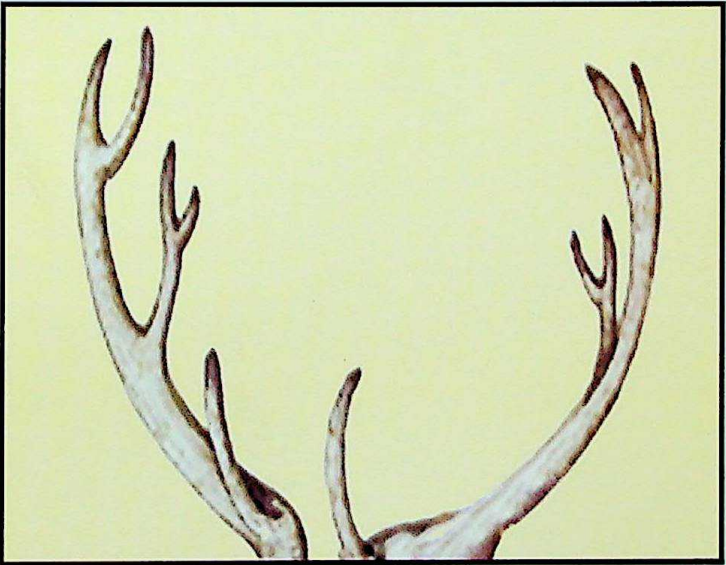
चित्र-4 बारहसींगा

चित्र-5 चमेली का पौधा

चित्र-6 उल्लू के पंख

चित्र-7 मूंज (रामशर)

चित्र-8 श्वेत करवीर (सफेद कनेर)

चित्र-9 लाल करवीर (लाल कनेर)

चित्र–10 कृष्ण करवीर

चित्र–11 घोड़े की नाल
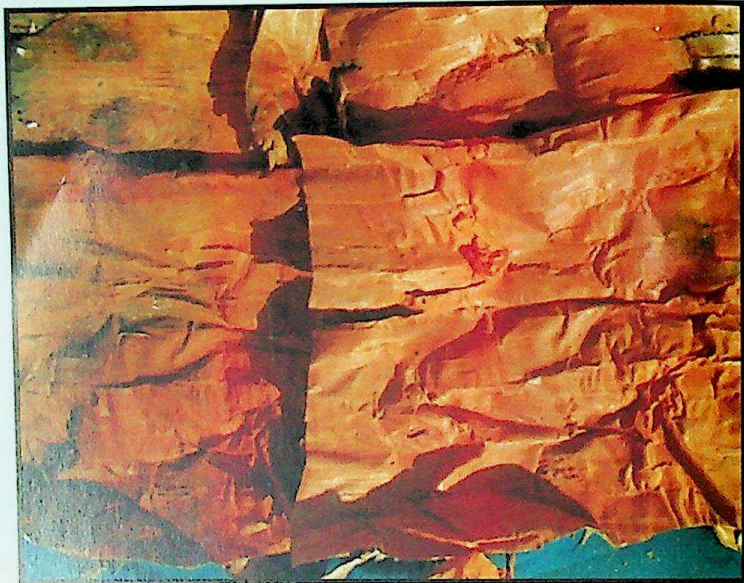
चित्र–12 भोजपत्र

चित्र–13 अनार का वृक्ष

चित्र–14 काला गुलाब
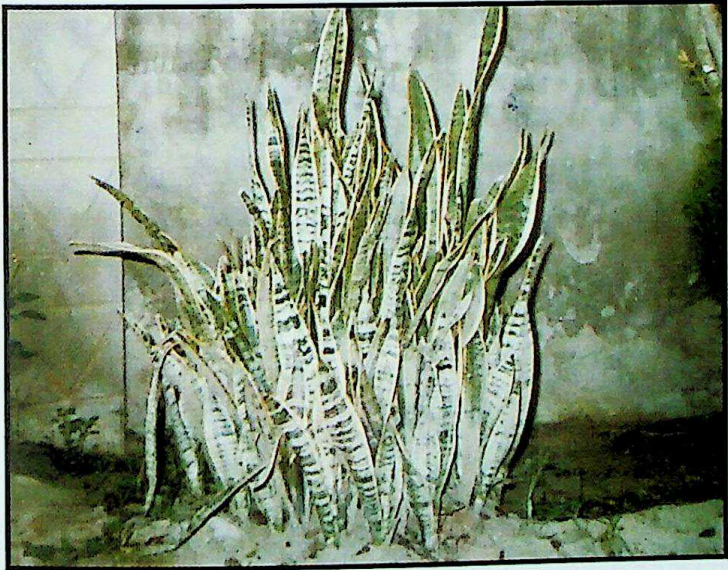
चित्र–15 नागपुष्पी

चित्र-16 हल्दी का पौधा, हल्दी एवं हल्दी की गाँठ

चित्र-17 गिलोय

चित्र–18 मेंहदी का पौधा
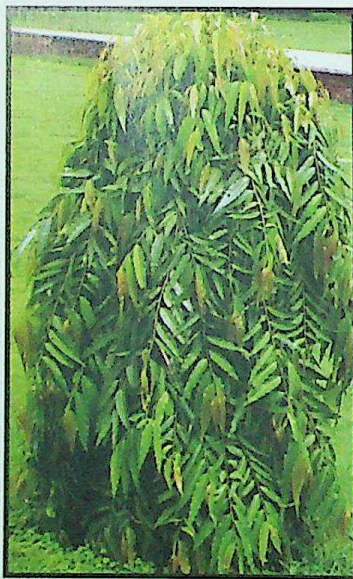
चित्र–19 अशोक वृक्ष

अशोक वृक्ष का पत्ता

चित्र-20 तुलसी का पौधा

चित्र-21 केसर एवं केसर के फूल

चित्र-22 अगर
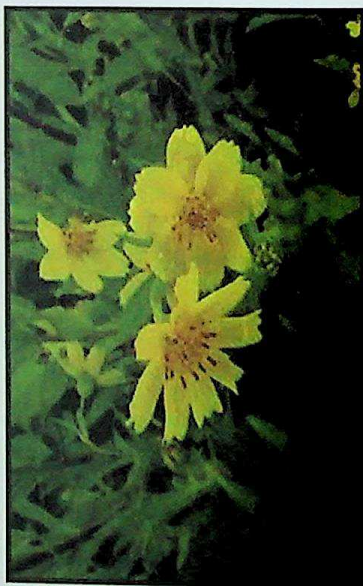
चित्र-23 काले सफेद तिल एवं तिल का पौधा

चित्र–24 तगर
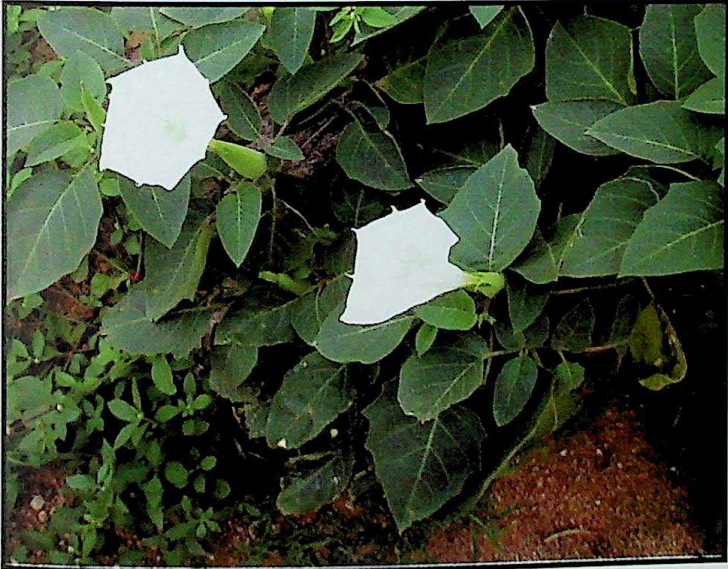
चित्र–25 काला धतूरा

चित्र-26 मोरपंख

चित्र-27 सूअर के दाँत

चित्र-28 हाथी के दाँत

चित्र-29 नीम का वृक्ष

चित्र-30
लाल रत्तियाँ
(गुंजाफल)
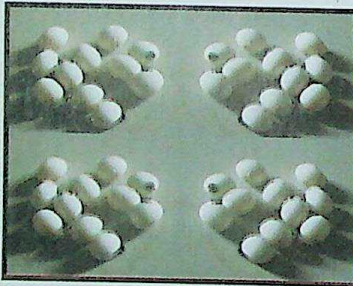
चित्र-31
सफेद रत्तियाँ
(श्वेत गुंजा)

चित्र–32 रक्त चन्दन

चित्र–33 श्वेत चन्दन
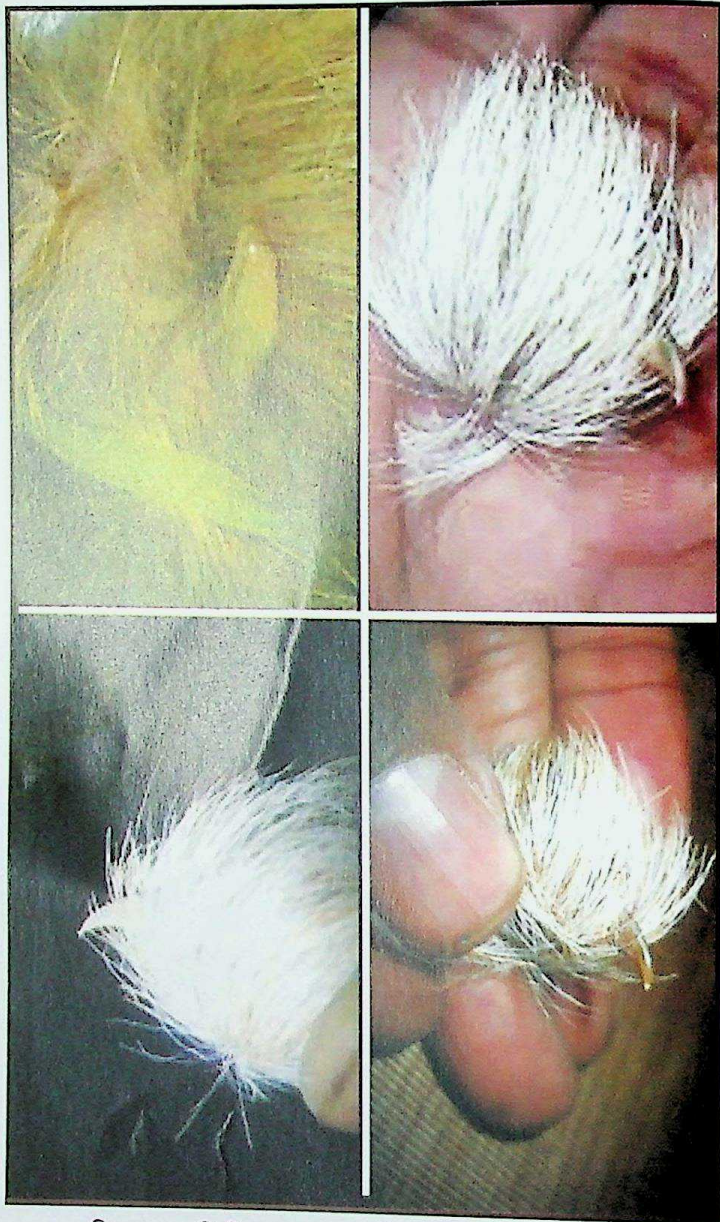
चित्र-34 विभिन्न प्रकार की गीदड़ (सियार) सिंगी
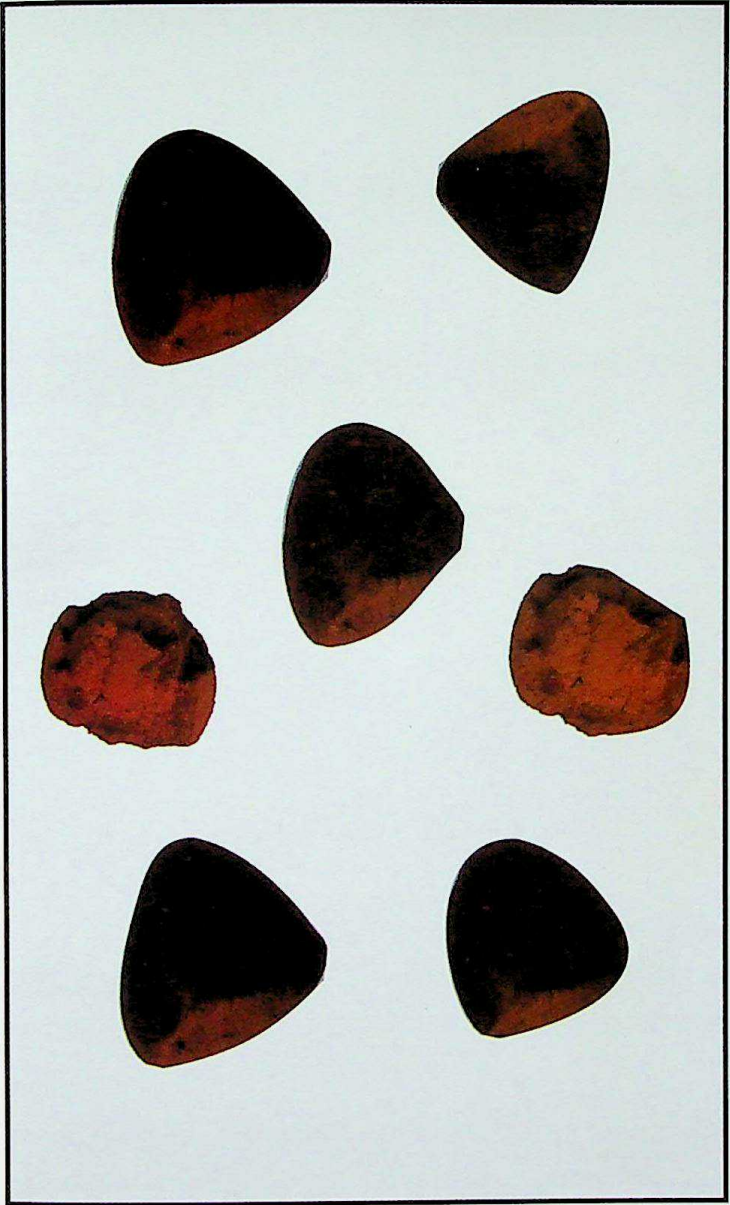
चित्र-35 गोरोचन (मंगला)

चित्र-36 वट वृक्ष का बांदा
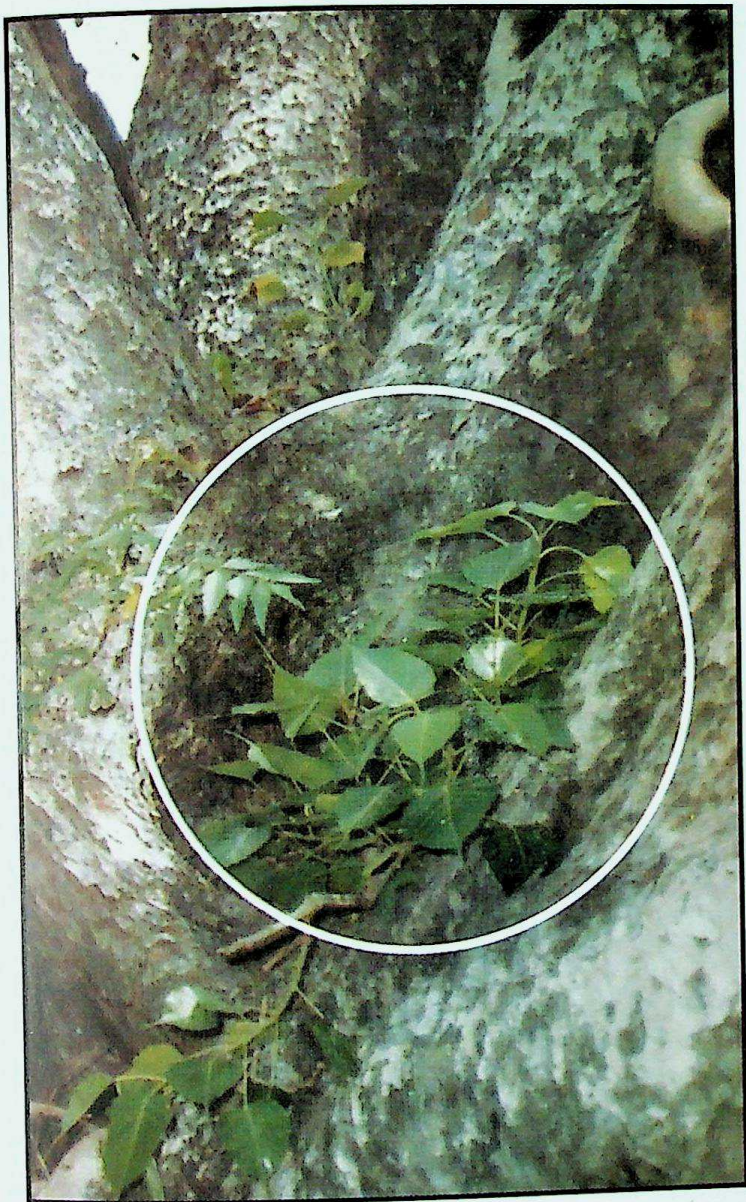
चित्र–37 नीम वृक्ष का बांदा
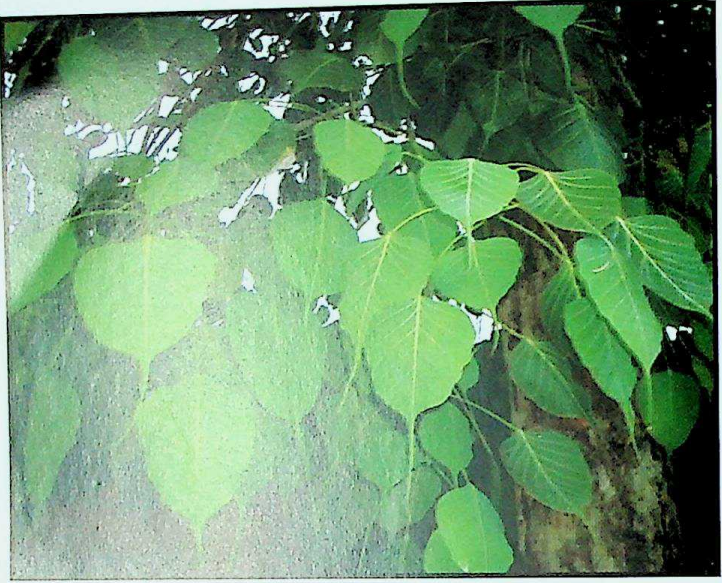
चित्र–38 पीपल वृक्ष के पत्ते

चित्र–39 वट वृक्ष के पत्ते

चित्र-40 एरण्ड

चित्र-41 पीपल का बांदा
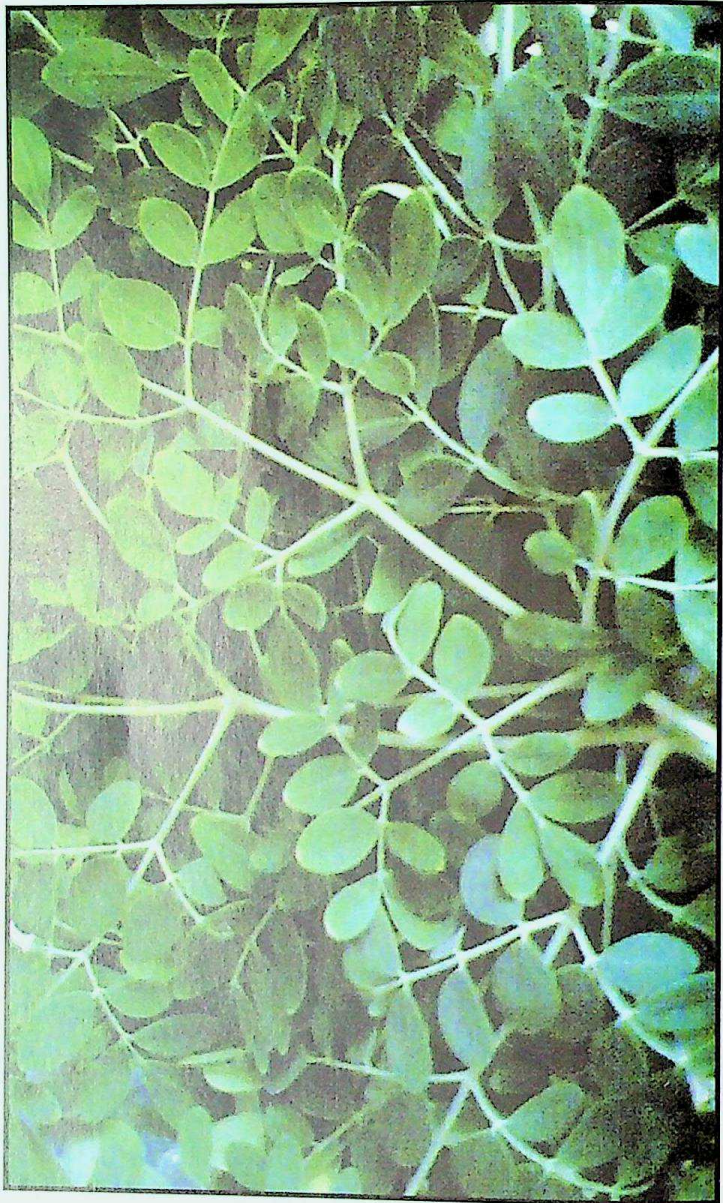
चित्र-42 अन्जीर
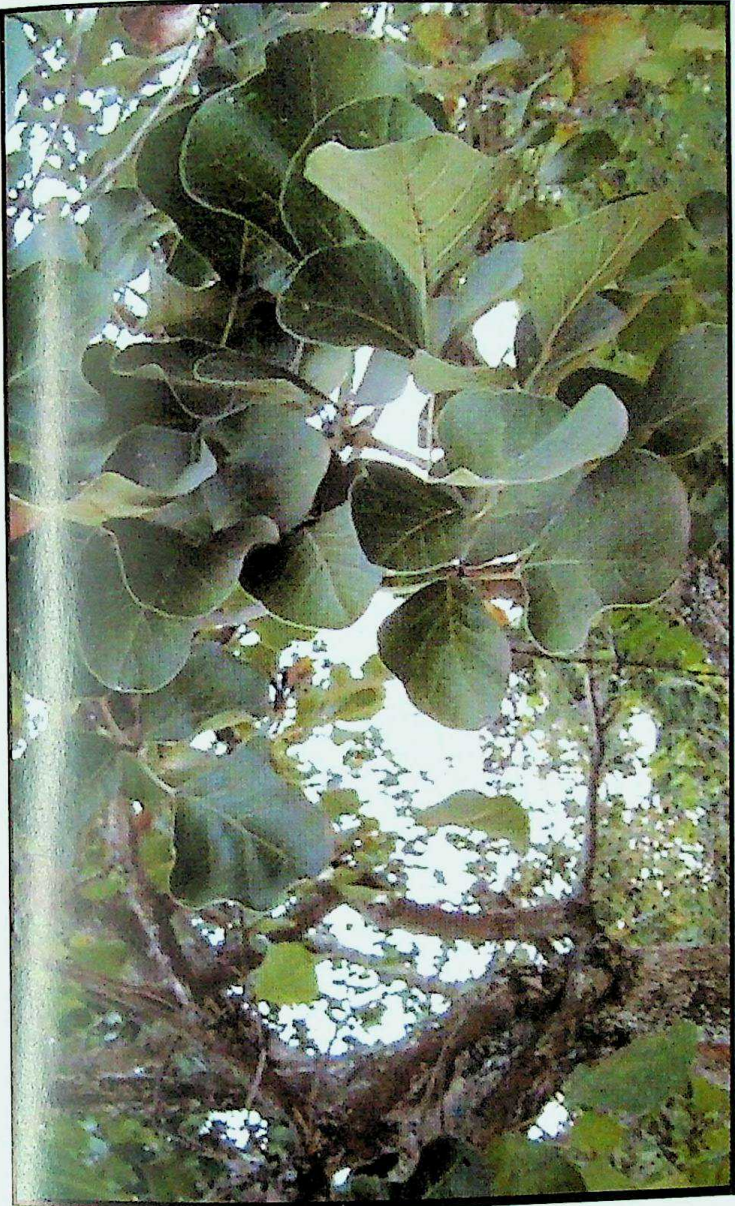
चित्र–43 पलाश (ढाक) का वृक्ष
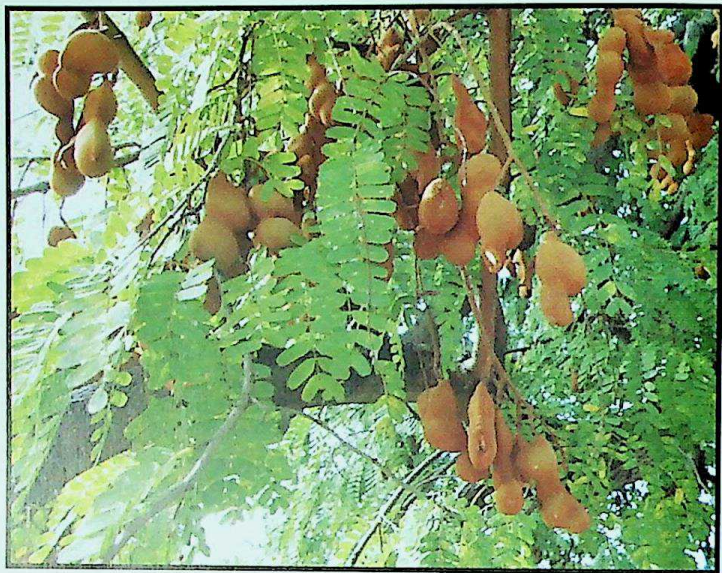
चित्र-44 इमली का वृक्ष (पत्ते व फल)
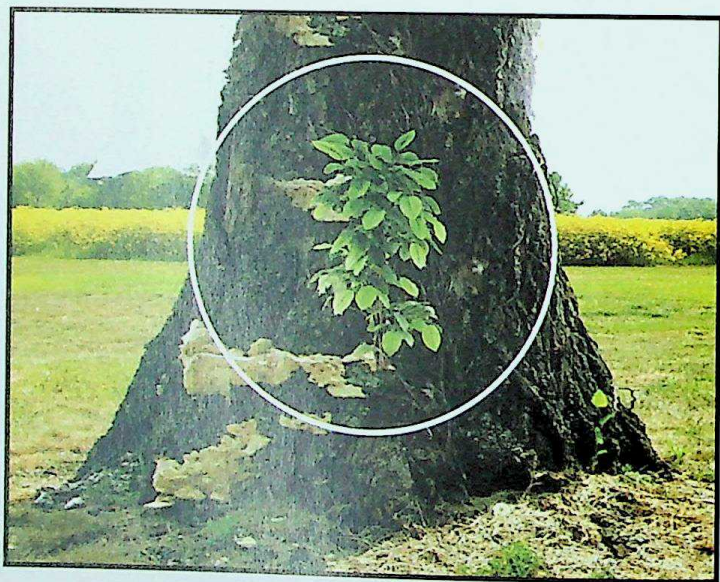
चित्र-45 बेरी का बांदा

चित्र–46 सीरीष (सिरसा का पेड़)

चित्र–47 रीठा का वृक्ष

चित्र–48 विल्व का वृक्ष व फल

चित्र–49 छुई–मुई का पौधा

चित्र-50 अगस्त का पौधा
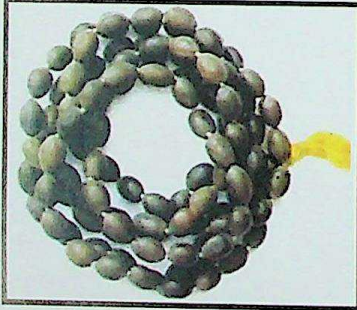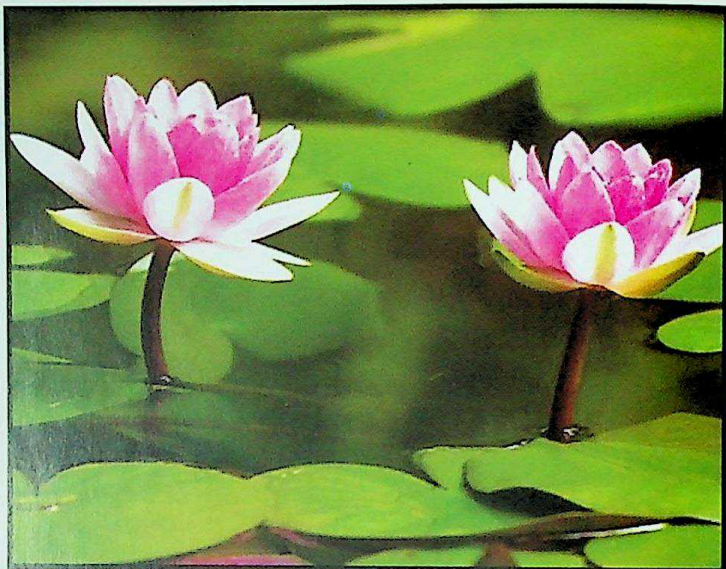
चित्र-51 कमल का पौधा व कमल गट्टे की मालाएँ

गुलाब का स्वाद कसैला और सुगन्ध मनमोहक होती है। इसके पत्ते व फूल बहुत से रोगों का शमन करते हैं। जैसे—कोद, पित्त, दाह, दस्त, सिर पीड़ा, गुर्दा पीड़ा, खफकान और गशी आदि। इसका गुण शरद है।

काला गुलाब दुष्प्राप्य है।

## शनि दूर करने के लिए

1. काले गुलाब का पौधा घर में लगाकर साफ पानी चढ़ाने से तथा इसके दर्शन करने से शनि ग्रह शान्त होता है। यह उर्दू की काली किताब का प्रयोग है। जो मेरे परम मित्र श्री बाल कृष्ण से प्राप्त हुआ है।
2. काले गुलाब की जड़ तथा पुष्प धारण करने से शनिग्रह का प्रकोप दूर होता है। यह प्रयोग सिद्ध है।

# नागपुष्पी

### नागदौन के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | नागदमनी |
| हिन्दी | नागदौन |
| बंगाली | नागदनी |
| मराठी | नागदवणी |
| गुजराती | नागडमण |
| कर्णाटकी | नागदमनी |
| नैपाली | तितापात |
| फारसी | मरचोव |

**अरबी** **वलीवन**

**पंजाबी** **नागदौन**

**तथा–नागपुष्पी, महायोगेश्वरी, वनकुमारी, नागदमन।**

नागदौन को प्रायः उपवनों व घरों में लगाया जाता है। इसके पत्ते हरे-सफेद धारीदार और तलवार जैसे होते हैं, जो ऊपर से नाग से फन सदृश लगते हैं। इसके पत्ते कयोड़ा व कवार जैसे होते हैं।

इसकी पहचान के लिए देखें चित्र नं० 15 नागदमनी जड़ी कई रोगों में लाभकारी है, जैसे—फोड़ा-फुन्सी, मूत्र-गन्ध, योनि दोष, साँप का विष उतारने, वमन, कृमि, उदर रोग, खाँसी, शूल और ज्वर आदि। इसका प्रयोग ग्रह शान्ति के लिए भी किया जाता है। इसकी तासीर (गुण) गर्मतर है।

आइए नागदौन के तन्त्र प्रयोग करें।

## नागदौन की जड़

नागदौन की जड़ को विधिवत् प्राप्त कर ताबीज में डालकर, कण्ठ में धारण करने से विजय की प्राप्ति होती है, तथा भूत-प्रेत की बाधा नष्ट होती है।

## रोग नाश के लिए

नागदौन की जड़ को गाय के दूध के साथ प्रयोग करने से सभी तरह के रोगों का नाश होता है।

## दरिद्रता नाश के लिए

स्वर्ण के ताबीज में नागदौन की जड़ डालकर घर में स्थापित करने

से दरिद्रता का नाश होता है।

## नागदौन की कलम

नागदौन की जड़ की कलम से हस्ताक्षर करने से भी दरिद्रता का नाश होता है।

## अकाल मृत्यु के लिए

चन्द्र ग्रहण के समय नागदौन की जड़ प्राप्त करें। इस जड़ को चाँदी के ताबीज में डालकर नीले धागे से बाँधकर कण्ठ पर धारण करने से अकाल मृत्यु दूर होती है।

## वशीकरण के लिए

रवि पुष्य नक्षत्र में नागदौन की जड़ के 108 मनके बना कर लाल धागे में डालकर धारण करने से प्रबल वशीकरण होता है, तथा एक-एक दाना दोनों कानों में तथा नागदौन की जड़ अंगूठी की तरह धारण करने से वशीकरण होता है।

## नागदौन का पौधा

नागदौन का पौधा घर में लगाने से सर्प घर में प्रवेश नहीं करते तथा न ही सर्प का भय रहता है।

## नागदौन की माला

नागदौन की जड़ की माला बनाकर इससे नाग देवता का मंत्र जपने से नाग देवता शीघ्र सिद्धि प्रदान करते हैं।

# हल्दी (हरिद्रा)

## हल्दी के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | हरिद्रा |
| बंगाली | हलुट |
| मराठी | हलद |
| गुजराती | हलदर |
| कर्णाटकी | अरशिना |
| तैंलगी | पशप |
| अंग्रेजी | टर्मेरिक |
| लैटन | करश्युमालोगा |
| फारसी | जरद चोब |
| अरबी | उरुकुसुफर |
| पंजाबी | हलदी |

हल्दी का प्रयोग हर घर में दाल सब्जी बनाने के लिए होता है। जो पीले चून जैसा होता है। यह एक पौधे का मूल (कन्द) है, जैसे अदरक, और शकरकन्दी आदि।

इसके पौधे 2 फुट ऊँचे होते हैं, पत्ते कुछ हरा पीला रंग लिए होते हैं तथा आदीनार अन्त में कुछ नुकीले होते हैं। हल्दी प्रायः सभी स्थानों पर प्राप्त हो जाती हैं

हल्दी से एक विशेष प्रकार की सुगन्ध आती है। यह रक्तपित्त विकार में लाभकारी है। इसका गुण शरद-खुश्क रक्त नाशक है।

हल्दी के पोधे की पहचान के लिए देखें चित्र नं० 16।

## मनोकामना पूर्ण करने के लिए

### यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८ | १५ | २ | ७ |
| ६ | ३ | १२ | ११ |
| १४ | ६ | ८ | १ |
| ४ | ५ | १० | १३ |

इस यन्त्र को हल्दी के रस के कागज पर या भोजपत्र के ऊपर लिखें, तथा इस यन्त्र के नीचे अपना मनोरथ लिख दें फिर इसको पलीता बना करके रविवार के दिन जला दें। इस तरह सात रविवार तक प्रयोग करने से तथा साथ ही इस मंत्र का नित्य हल्दी की माला से जप करे तो शीघ्र ही मनोरथ पूरा होगा।

**मन्त्र—ओं ह्री ह्रां सः।**

## प्रमेह दूर करने के लिए

बारीक पिसी हुई हल्दी में आँवले का स्वरस व देशी शहद मिलाकर चटाये तो प्रमेह दूर होगा।

## नजर दूर करने के लिए

हल्दी के द्वारा पीले रंग के रंगे हुए सूती कपड़े में अजवायन रखकर पोटली सी बनाकर काले धागे द्वारा बाँधकर बच्चे के गले में लटकाये रखने से बुरी नजर दूर होती हैं।

## बुरी नजर दूर करने के लिए–यन्त्र

| १४८ | १३ | १३८ | ६ |
|---|---|---|---|
| २ | १४६ | १३ | १३९ |
| ६३ | ७ | १४० | १ |
| २० | १३४ | ६ | १४७ |

इस यन्त्र को बुधवार के दिन हल्दी से भोजपत्र पर लिखकर बालक के गले में बाँधने से बालक की बुरी नजर दूर होती है।

### गिलोय के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | गुड़ची |
| हिन्दी | गिलोय |

| | |
|---|---|
| **बंगाली** | **गुलंच** |
| **मराठी** | **गुलवेल** |
| **कर्णाटकी** | **अमृतवेल** |
| **अंग्रेजी** | **गुलाचा** |
| **फारसी** | **गिलाई** |
| **अरबी** | **गिलोई** |
| **नेपाली** | **गडगू गुरजो** |
| **पहाड़ी** | **गडगू गुरजो** |
| **पंजाबी** | **गिलोय** |

गिलोय एक बेल जैसा पौधा है, जो वृक्षों और झाड़ियों पर चढ़ा रहता है और मन्दिर आदि में लगाया जाता है। यह जड़ी सर्वत्र सुलभ है।

इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 17 देखें। गिलोय का स्वाद कड़वा-कसैला होता है, यह कई रोगों को शान्त करती है, जैसे—ज्वर, प्यास, वमन, वात, प्रमेह, पांडु रोग, खाँसी, कुष्ट, कृमि, खूनी बवासीर, पित्त और कफ आदि। यह रसायन और पुष्टिकारक है।

## सर्प भय से मुक्ति के लिए

सर्प भय से मुक्त होने के लिए रवि पुष्य नक्षत्र में गिलोय की जड़ लाकर निम्नांकित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके गले में माला की तरह पहनने से सर्प भय से मुक्ति मिलती है।

**मन्त्र—ओं नमो अग्नि रूपाय ह्रीं नमः।**

## भूत-प्रेत दिखाई देने का यन्त्र

**यन्त्र**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६३ | ३३ | २६ | ४६ |
| ४१ | ६७ | ५३ | ६१ |
| ४४ | १६ | ३२ | ७५ |
| ६४ | ५ | २७ | ४६ |

इस यन्त्र को गिलोय के रस से भोजपत्र पर लिखकर मंगलवार को रात्रि के समय इस यन्त्र का धूप तथा रोली से पूजन आदि करके सोते समय सिरहाने रखें तो रात भर भूत दिखाई दें।

## भूत लगाने के लिए

गिलाये के रस में गुञ्जा का विषुचीता तथा केवाच का चूर्ण मिलाकर देने से भूत लगाता है (उड्डीश तन्त्र से)।

## मेंहदी

मेंहदी प्रायः सभी स्थानों पर सुलभ है। इसका प्रयोग मंगलकार्यों में होता है। स्त्रियाँ इसका अधिक प्रयोग क़रती हैं। इसका पौधा कई लोग घरों में भी लगाते हैं।

पहचान के लिए देखें चित्र नं० 11।

मेंहदी का पौधा झाड़ीदार होता है, जिसके पत्ते हरे और झाड़ की ऊंचाई 7-8 फुट होती है।

## मेंहदी की छाल

मेंहदी की टहनी की छाल खाने से रक्त साफ हो जाता है तथा मेंहदी की छाल पथरी को भी दूर करती है।

## क्रोध शान्ति के लिए

मेंहदी की जड़ तथा बीजों को ताबीज में भरकर कण्ठ में धारण करने से क्रोध शान्त होता है।

## ग्रह दूर करने के लिए

ग्रह दूर करने के लिए मेंहदी की जड़ को धारण करें।

## मासिक स्राव बन्द करने के लिए

पाषाण भेद की मेंहदी में मिलाकर हाथों पर लगाने से गर्भ नहीं ठहरता, साथ ही मासिक स्राव भी बन्द हो जाता है।

## कीटाणु से रक्षा के लिए

जन्म लेने के तुरन्त पश्चात, शिशु के शरीर पर मेंहदी का लेप करके कुछ समय पश्चात् नहलाने से उसकी त्वचा कीटाणु रक्षक बन जाती है और उस पर किसी रोग का प्रभाव नहीं होता।

## ज्वर नाश के लिए

मेंहदी धारण करने से ज्वर का नाश हो जाता है।

# अशोक

अशोक पूर्व हिमालय, बंगाल और भारत के बहुत से स्थानों पर पाया जाता हैं। इसके वृक्ष आजकल स्कूलों, पार्कों तथा घरों में भी लगाए जाते हैं। अशोक सदा-बहार वृक्ष है, जिसका पेड़ सीधा, सघन और छायादार होता है। इसकी लकड़ी हल्के लाल-भूरे रंग की होती है और पत्ते हरे पतली टहनियों पर लगे होते हैं, जो 9 इंच लम्बे और नोकीले होते हैं। इसके पत्तों का रंग कुछ-कुछ लाल ताँबे सी आभा लिए भी रहता है, अतः इसे ताम्र पल्लव भी कहते हें। बसन्त ऋतु में इस पर फूल आते हैं, जो नारंगी लाल रंग के और गुच्छेदार होते हैं।

पहचान के लिए देखें चित्र नं० 19।

## शोक नाश के लिए

अशोक को घर में लगाने से शोक का नाश होता है।

## सफलता के लिए

अशोक का पत्ता सिर पर धारण करने से कार्य में सफलता मिलती है।

## देवी प्रसन्न करने के लिए

इस वृक्ष पर जल चढ़ाने से देवी प्रसन्न होती है।

## लाभ के लिए

अशोक वृक्ष के 11 बीज रवि पुष्य नक्षत्र में चाँदी के ताबीज में डालकर

धारण करने से हर कार्य में लाभ प्राप्त होता है।

## रोग नाश के लिये

अशोक वृक्ष की छाल को 41 दिन उबाल करके पीने से स्त्री के सभी रोगों का नाश होता है।

## चिन्ता के लिए

प्रातःकाल के समय अशोक के 11 पत्तों को चबाने से कुछ दिनों में चिन्ता दूर होगी।

## धन के लिए

अशोक की जड़ को विधिवत् प्राप्त करके धारण करने से धन-लाभ होता है।

## दारिद्रय नाशक प्रयोग

अशोक वृक्ष के फूल को पीसकर उसमें शहद मिलाकर प्रयोग करने से दारिद्रय नाश होता है।

## अशोक का बाँदा

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में अशोक का बाँदा प्राप्त करके पीसें और पी जाएँ तो व्यक्ति अदृश्य हो जाता है।

## धन के लिए

अशोक वृक्ष की जड़ का एंक छोटा-सा टुकड़ा लेकर किसी पवित्र स्थान पर घर में रखकर धूप-दीप देते रहने से घर में घन की प्रचुरता रहती है।

## अशोक की कलम

अशोक की कलम से देवी मन्त्र लिखकर पास रखने से शीघ्र सिद्धि मिलती है।

## हरि प्रिय तुलसी

यह एक अति पवित्र पौधा माना जाता है, जिसका पूजन होता हैं। इसको हरि प्रिय भी कहते हैं। तुलसी का पौधा 3-4 फुट तक ऊँचा होता है। इसकी शाखाएँ सीधी और फैली हुई होती हैं। इसके पत्ते दो तीन इंच लम्बे, हरे रंग के और अंडाकार होते हैं। तुलसी के पौधे प्रायः मन्दिरों में लगाए जाते हैं और हिन्दू लोग इसे घरों में भी लगाते हैं।

इसकी पहचान के लिए देखें चित्र नं० 20।

प्रायः तुलसी भारत वर्ष में सर्वत्र होती है। तुलसी की तीन किस्में मिलती हैं।

1. श्वेत तुलसी।
2. काली तुलसी।
3. राम तुलसी आदि।

## भूख दूर करने के लिए

तुलसी की जड़, कमल के बीज आँवला, अपामार्ग का दाना इन चारों वस्तुओं को बारीक करके मटर के दाने के बराबर की गोली तैयार करके रख लें, कुछ दिनों तक एक गोली गाय के दूध के साथ प्रतिदिन लेने से भूख और प्यास की इच्छा समाप्त हो जाती है।

## विषम ज्वर दूर करने लिए

एक सप्ताह तक काली तुलसी की पत्तियों की माला गले में धारण करने से कभी कम, कभी अधिक आने वाला, विषम ज्वर शान्त हो जाता है।

## वातज ज्वर के लिये

सोमवार के दिन तुलसी के पौधे को अभिमन्त्रित करके मंगलवार की प्रातः जड़ से उखाड़कर लाल सूत में बाँधकर, शिखा में बँधवा देने से वायु के विकार के कारण पैदा हुआ बुखार नष्ट हो जाता है।

### मंत्र

**ओं कुरु बन्दे अमुकस्य (नाम)**
**ज्वर नाशय ह्रीं स्वाहा।**

## उत्तम पति के लिये

प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर श्रद्धा भाव से, विवाह की इच्छुक कन्या माँ पार्वती देवी के चित्र के समक्ष घी का दीपक प्रज्जवलित करके तुलसी की माला के 101 मनकों की 21 माला का जाप नियमित रूप से करें तो उत्तम पति की प्राप्ति होती है।

### मंत्र

**हे गौरि शंकरद्धिगिनौ यथा त्वं शंकर प्रिया।**
**तथा माँ कुरु कल्याणि कान्त कान्ता सुदुर्लभाम् ॥**

## स्मरण शक्ति के लिए मंत्र

**ओं नमो देवी कामाख्या**
**त्रिशूल खड़ग हस्त पाधां**
**पाती गरुड़**
**सर्व लखी तू प्रीतये**
**समागन**
**तत्व चिन्तामणि**
**नरसिंह चल चल**
**क्षीन कोटि कात्यायनी**
**तालब प्रसाद के**
**ओं हों हीं क्रूं**
**त्रिभुवन चालिया**
**चालिया स्वाहा**

प्रातः के समय स्नान करने के बाद तुलसी को जल चढ़ा करके, इस मंत्र का जाप करते हुए तुलसी के इक्कीस पत्ते तोड़ के खा लिया करें इस तरह इक्कीस दिन तक नित्य प्रयोग करने से स्मरण शक्ति तेज होती है।

# तंत्र शास्त्र में महान् औषधि केसर

## केसर के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | अग्निशिखा |
| हिन्दी | केसर |
| अंग्रेजी | सेफरोन |
| फारसी | जाफरान |
| पंजाबी | केसर |
| उर्दू | जाफरान |

केसर कश्मीर में श्रीनगर के आस-पास पैदा किया जाता है। इसके पौधे दो फुट ऊँचे होते हैं। केसर का प्रयोग अनेक रोगों को शान्त करने में होता है और तन्त्र शास्त्र में भी इसे बहुत उपयोगी माना गया है।

इसकी पहचान के लिए देखें चित्र नं० 21 तन्त्र शास्त्र में शुद्ध केसर का ही प्रयोग लाभकारी है। अशुद्ध केसर प्रभावहीन होता है जिससे तन्त्रों की सफलता में सन्देह उत्पन्न हो जाता है। अतः शुद्ध केसर का ही प्रयोग करे। जो नवम्बर मास में श्रीनगर से प्राप्त किया जा सकता है।

## पशु, पक्षी और शत्रु की गति अवरुद्ध करने के लिए

केसर की स्याही द्वारा अनार की लकड़ी की कलम से भोजपत्र पर शत्रु के नाम के साथ एक रास्ता बनाये और उस पर नीला धागा फैलाये, साथ ही नीचे लिखे मंत्र को सिद्ध करके इस यन्त्र पर 101 बार पढ़ें तो पशु, पक्षी और शत्रु की गति अवरुद्ध होये।

**मन्त्र–ओं सह बलेशाय स्वाहा।**

## गर्भ के लिए

### यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३४२ | ३४९ | २ | ढ |
| ६ | ३ | ३४६ | २४१ |
| ४४८ | २४३ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ३४४ | ३४४ |

इस ताबीज को भोजपत्र के ऊपर केसर से रविवार को लिखकर स्त्री के गले में बाँधें तो गर्भ की प्राप्ति होगी।

## भूत-प्रेत का भय दूर करने के लिए

### यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | [illegible] | (५) ६ | ३ |
| १ | ८ | २ | ६ |

इस यन्त्र को भोजपत्र पर केसर से लिखकर, ताबीज में डालकर, बालक के गले में बाँधने से भूत-प्रेत आदि का भय दूर होगा।

## व्यापार में लाभ प्राप्ति के लिए

**यन्त्र**

| ५० | ५७ | २ | ७ |
|---|---|---|---|
| ६ | ३ | ५२ | ५२ |
| ५६ | ५१ | ८ | ५१ |
| ४ | ५ | ५२ | ५५ |

इस यन्त्र को केसर की स्याही से नदी का जल डालकर चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर शुक्रवार के दिन 21000 यन्त्र लिखकर फिर 21000 आटे की गोलियाँ बना करके मछलियों को खिलाने पर यह यन्त्र सिद्ध होगा। तब इस सिद्ध यन्त्र को दुकान पर लिखकर लगायें तो दिन प्रतिदिन लाभ प्राप्त होगा।

## रोग दूर करने के लिए

**यन्त्र**

| ८ | २ | ६ | १ |
|---|---|---|---|
| ७ | ३ | ६ | ४ |

इस यन्त्र को रविवार के दिन केसर द्वारा भोजपत्र के ऊपर 31000 लिखकर पूजा करें, तब इस यन्त्रों को नदी में प्रवाहित करने से रोग से छुटकारा मिल जाता है। इस क्रिया को 21 दिन तक करें।

## हर कार्य में सफलता के लिए

यन्त्र

| | | |
|---|---|---|
| ८ | १ | ६ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | ९ | २ |

हर कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए केसर से इस यंत्र को लिखकर अपने पास रखें।

## जल मोहन करने के लिये यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | ३ | १ | ८ |
| ८ | १४ | ४ | ६ |
| ४ | ४ | ४५ | ४ |
| ४६ | २६ | ४ | ४७ |

इस यंत्र को केसर से भोजपत्र के ऊपर लिखकर जल में घोलकर जिस व्यक्ति को पिला दें, वही वशीभूत होकर आज्ञा का पालन करेगा।

## डाकिनी नाशक यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ११ऽ | ६६ | १ | ५ |
| ० | ४ | ० | ६१ |
| ऽ | = | ०। | ०।० |
| ९ | १ | ऽ | ४० |

इस यन्त्र को केसर की स्याही से भोजपत्र के ऊपर लिखकर धारण करने से डाकिनी आदि का दोष समाप्त हो जाता है।

## धन प्राप्ति का यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६६ | ६३ | २ | ८ |
| ७ | ३ | ९० | ८९ |
| ९१ | ८६ | ९ | १ |
| ४ | ६ | ८७ | ९१ |

किसी भी सोमवार को इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर से लिखकर धूप दीप देकर चाँदी के ताबीज में भरकर कण्ठ पर धारण करने से आर्थिक उन्नति होती है, तथा धन की प्राप्ति होती है।

## मित्र आकर्षण

यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५० | ५ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ५२ | ५२ |
| ५६ | ५१ | ८ | ५१ |
| ४ | ५ | ५२ | ५५ |

इस यन्त्र का दूसरा प्रयोग, इस यन्त्र को केसर की स्याही में बहती नदी का जल डालकर चमेली की कलम से लिखें। इस प्रकार से तैयार किये यन्त्र को मित्र के बालों के साथ जला डालें तो मित्र का आकर्षण होगा।

## विद्या प्राप्ति के लिए यन्त्र

| | | |
|---|---|---|
| ११ | १ | ८ |
| ४ | ७ | ६ |
| ५ | १२ | ३ |

इस यन्त्र को सिद्ध करके, अपनी भुजा में धारण करने से, विद्या की प्राप्ति होती है।

## चोंतिसया लक्ष्मी यन्त्र

### यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| .१६ | .९ | .४ | .५ |
| .३ | .६ | .१५ | .१० |
| .१३ | .१२ | .१ | .८ |
| .२ | .७ | .१४ | .११ |

इस यन्त्र को अनार की कलम व केसर से, रवि पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर लिखकर, दुकान में टांग दें व रोज पूजा करें तो लक्ष्मी की प्राप्ति होगी।

## अनाज में पड़ें कीड़े दूर करने के लिये

इस यन्त्र को केसर से भोजपत्र, पर लिखकर अनाज के भण्डार में रख देने से अनाज में पड़े कीड़े दूर हो जाते हैं।

**यन्त्र**

| २२ | ३ | ६ | १५ | १६ |
|---|---|---|---|---|
| १४ | २० | २१ | २ | ८ |
| १ | ७ | १३ | १६ | २५ |
| १८ | १४ | ५ | ६ | १२ |
| १० | ११ | १७ | २३ | ४ |

## अगर

अगर एक सुगन्धित काले-भूरे रंग की लकड़ी है जो आसाम में पैदा होती है। इसमें से चमेली के फूलों की सी सुगन्ध आती है। इसके पेड़ बहुत लम्बे होते हैं और इसकी लकड़ी बहुत भारी होती है, जो पानी में डूब जाती है। पंसारियों के यहाँ से अगर प्रायः मिल जाता है। जिसका प्रयोग अष्टगंध बनाने में भी होता है। इसका स्वाद कड़वा होता है। तन्त्र शास्त्र में इसका प्रयोग होता है और बहुत से रोग इसके प्रयोग से शान्त होते हैं, जैसे—वात, पित्त, कान के रोग और कोढ़ आदि इसके सेवन से नाश होता है। इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 22 देखें। इसका मूल नाम अगर ही है।

# तंत्र शास्त्र में तिल

## तिल के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | तिल |
| हिन्दी | तिल, तिली |
| बंगाली | तिलगाच्छ |
| मराठी | तिल |
| गुजराती | तिल |
| कर्णाटकी | एलु |
| अंग्रेजी | सिसेम नाईजरसीड |
| फारसी | कुजद |
| अरबी | सिशिम्म |
| पंजाबी | तिल |

तिल भारत में सभी स्थानों पर पैदा होता है। इसका झाड़ दो हाथ ऊँचा होता है, और पत्ते हरे, लम्बे और गोल होते हैं। पत्ते के बीच में फलियां होती हैं, जिसमें तिल के बीज होते हैं।

तिल तीन प्रकार के होते हैं—

(1) काले तिल

(2) सफेद तिल

(3) लाल तिल

तन्त्र शास्त्र में सफेद तिल का प्रयोग अधिक होता है। तिल शरीर को मोटा करता है, स्त्री के स्तनों में दूध पैदा करता हे, मनी पैदा करता है, और मुँह की छाईयाँ दूर करता है। इसका गुण गर्म तर है।

इसकी पहचान के लिए देखें चित्र नं० 23।

## पीलिया झाड़ने के लिये मंत्र

**मंत्र—ओं नमो वीर वैताल इसराल।**
**नाहर सिंह कहे तु देव खादी।**
**तू बादी पीलियाँ कूँ भिदाती कारे।**
**झाडैं पीलिया रहे न एक निशान।**
**जो कहीं रह जाये तो हनुमंत की आन।**
**मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।**
**फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।**

**विधि**—एक काँसे की कटोरी में तिल का तेल लेकर रोगी के सिर पर रखें, और कुशा से उस तेल को चलाते हुए ऊपर लिखे मन्त्र को 21 बार पढ़ें, इस प्रकार 7 दिन तक करने से पीलिया दूर हो जाता है।

## बिल्ली द्वारा काटने पर

बिल्ली द्वारा काटने पर काले तिलों को पानी के साथ पीसकर लेप कर दें, साथ ही पोदीना के कुछ पत्ते चबाने से बिल्ली का विष दूर होगा।

## तिल का हवन

शांति कार्य के लिए तिल का हवन शुभ माना गया है।

## तगर

तगर एक छोटा-सा पौधा है, जिस की जड़ औषधियों में और अष्टगन्ध बनाने में काम आती है। इसका रंग भूरा होता है। यह पंसारियों

पंसारियों की दुकान से मिल जाता है। इसका मूल नाम तगर ही है। इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 24 देखें।

## भूत-प्रेत दूर करने के लिए

तगर को ताबीज में डालकर, पहनने से भूत-प्रेत दूर होते हैं।

## मक्खियाँ दूर करने के लिये

तगर को हरिताल के साथ पीसकर, इसको एक मक्खी का रूप दें, इस बनी हुई मक्खी को घर के भीतर रख दें, इसकी गन्ध से सभी मक्खियाँ घर से निकल जायेंगी।

## दाँत का कीड़ा दूर करने के लिये

तगर और पलाश की जड़ को चबाकर उस चर्बित वस्तु अथवा उसके रस को कान में डालने से गोमक्षिका नामक कीड़ा विनष्ट हो जाता है।

# काला धतूरा

### धतूरा के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | धुस्तर (कनक) |
| हिन्दी | धतूरा |
| बंगाली | धुतुरा |
| मराठी | धोतरा |

| | |
|---|---|
| **गुजराती** | **धतुरो** |
| **कर्णाटकी** | **मडकुलालिक** |
| **अंग्रेजी** | **थोरन आपल** |
| **अरबी** | **जोजमासील** |
| **फारसी** | **अस्तरलूनियाँ** |
| **पंजाबी** | **धतूरा** |

धतूरा भारत में प्रायः सभी स्थानों पर मिल जाता है, जिसके पौधे खाली पड़े स्थानों, सड़कों के किनारे और नदी-नालों के किनारे पैदा होते हैं। धतूरा चार प्रकार का होता है।

(1) श्वेत धतूरा
(2) हरा धतूरा
(3) पीला धतूरा
(4) काला धतूरा

धतूरे का पौधा 3-4 फुट ऊँचा होता है, जिसके पत्ते हरे सांवले रंग के और 3 इंच लम्बे 4 इंच चौड़े होते हैं। यहाँ पर केवल काले धतूरे का ही वर्णन किया जा रहा है। इसके फूल कुछ श्वेत, बैंगनी थोड़े काले रंग के होते हैं और बीज भूरे-काले रंग के होते हैं। इसके फल गोल, कांटेदार और छोटी-सी गेंद के समान नीचे लटके होते हैं।

धतूरे से अनेक रोगों का उपचार किया जाता है, जैसे—फोड़ा, फुन्सी, कृमि और चमड़ी के रोग आदि। धतूरा विषैला होता है जो मादकता देता है और दिमाग को सुन्न करता है। अधिक सेवन से मृत्यु भी सम्भव है। इसका गुण गर्म खुश्क है।

इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 25 देखें।

# मृत्यु के लिये

काले धतूरे का चूर्ण तथा चिता की भस्म मिलाकर मंगलवार के दिन जिसके ऊपर डाल दिया जायेगा, वह शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

# पृथ्वी में छिपा धन देखने के लिये

काले धतूरे की जड़ व छितवन की जड़ प्राप्त करें, सिर के बाल बिखेर के घर में लाकर इनकी छाल लेकर ताबीज में डालकर मुख में रख लें। इस तरह प्रयोग करने से आपको पृथ्वी में छिपा धन दिखाई देगा। यह प्रयोग कालरात्रि को ही करें।

# शत्रु का भय दूर करने के लिये

इस यन्त्र को काले धतूरे के रस से लिखकर गले में बाँधें तो शत्रु का भय दूर होगा।

**यन्त्र**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६ | १४ | ६ | ५१ |
| ७४ | ४ | ६ | ५२ |
| ३ | २८ | ८१ | ६१ |
| ६ | ५ | ४५ | ४५ |

## स्वप्नदोष दूर करने के लिये

रवि पुष्य नक्षत्र में काले धतूरे की जड़ 11 तोले का टुकड़ा लेकर ताबीज में भरकर कमर पर बाँधने से असमय में स्वप्न दोष नहीं होता।

## गर्भ रक्षक टोटका

कुमारी कन्या के हाथ से काते गये सूत से सिर से पैर तक नापकर, बराबर के 41 टुकड़े कर लें, उन्हें भली प्रकार बाँटकर मजबूत कर दें, उसी सूत में काले धतूरे की जड़ के 41 टुकड़ों को बांधकर महिला अपनी कमर में प्रसव होने तक धारण करें तो गर्भपात होने का भय नहीं रहेगा, तथा समय पर ही शिशु का जन्म होगा।

# मोर पंख

मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है, जो शुद्धता और पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। यह मैथुन नहीं करता, कहा जाता है, कि इसकी आँखों से गिरे आँसुओं को खाने से ही मोरनी गर्भवती होती है। इस पक्षी के पंखों से झाड़ा आदि किया जाता है मोर के पंखों को पवित्र माना जाता है क्योंकि भगवान श्री कृष्ण जी जी के मुकुट में ये सुशोभित थे, इसलिए मोर का पंख घर में होना शुभ माना जाता है।

इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 26 देखें।

## सर्प दूर करने के लिए

जहाँ पर मोर के पंख होते हैं। वहाँ पर सर्प प्रवेश नहीं करता।

## पुत्र प्राप्ति के लिए

मोर के पंख सितारे टिक्की को काटकर, खरल में पीस कर दो मास तक प्रयोग करें तो पुत्र पैदा होता है।

## ताबीज के लिए

मोर का पंख ताबीज लिखने के काम आता है।

# सूअर (शूकर) दाँत

भारत के प्रत्येक नगर कस्बे में सूअर देखा जा सकता है, जो प्रायः इसके माँस को खुराक के रूप में लेने के लिए पाला जाता है।

तन्त्र शास्त्र में सूअर के दाँत का ही अधिक प्रयोग होता हैं

## विजय के लिए

1. सूअर का दाँत कण्ठ में धारण करने से विजय की प्राप्ति होती है।
2. तथा इसको धारण करने से भूत-प्रेत आदि दूर हो जाते हैं।

## स्वप्न दोष के लिए

सूअर की दाँत रवि पुष्य योग में धारण करने से स्वप्न दोष नहीं होता।

## वीर्य स्तम्भन के लिए

यदि सूअर का दाँत कमर पर बाँधकर सम्भोग किया जाये तो वीर्य स्तम्भन होता है।

# हाथी दाँत

हाथी एक प्रसिद्ध पशु है, जिसकी सूंड के दोनों ओर दो लम्बे-लम्बे दाँत होते हैं, जो दिखाने के लिए ही हैं खाने के लिए नहीं। इस पशु को प्रत्येक व्यक्ति जानता है।

तन्त्र शास्त्र में हाथी दाँत का बहुत प्रयोग होता है। यह पंसारियों की दुकान से मिल जाता है।

## विद्वेषण के लिए

1. हाथी दाँत और सिंह के दाँत का चूर्ण बनाकर, मक्खन के साथ मिलाकर तिलक करने योग्य बनाकर मंत्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करें तो उस तिलक को देखते ही शत्रु आपस में लड़ने लगते हैं।
2. हाथी एवं सिंह के दाँतों का चूर्ण मक्खन में मिलाकर जिसका नाम लेकर विद्वेषण मन्त्र से अग्नि में हवन किया जायेगा उसकाविद्वेषण हो जाता है। (उड्डीश तंत्र का प्रयोग)

## विद्वेषण मन्त्र

**ओं नमो नारायणाय अमुकस्य**
**अमुकेन सह विद्वेषण कुरु-कुरु स्वाहा।**

## राहू ग्रह का शुभ फल लेने के लिए

हाथी दाँत का टुकड़ा अपने पास रखने से राहू का शुभ लाभ मिलता हैं तथा हर कार्य में सफलता मिलती है। (लाल किताब से)।

## नीम के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | निंब |
| हिन्दी | नीम |
| पंजाबी | निम |
| बंगाली | निमगाछ |
| मराठी | कडुनिंबडो |
| गुंजराती | लिंबडो |
| अंग्रेजी | निंबट्री |
| फारसी | नीब |

नीम एक प्रसिद्ध वृक्ष है, जो भारत में प्रायः सभी प्रदेशों में पाया जाता है। इसके पेड़ बहुत बड़े और ऊँचे होते हैं। बसन्त ऋतु में इस पर लाल पत्तियाँ आती हैं, तत्पश्चात सफेद पीले रंग के गुच्छेदार फूल लगते हैं। इसके फल को निंबौरी कहते हैं, जो वर्षा ऋतु में पक कर पीले रंग की होती हैं

इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 29 देखें।

नीम से कई रोगों का उपचार होता है, जैसे—रक्त विकार, आँख की व्याधियाँ, कृमि, कुष्ठ, गर्मी, विष, वात, खाँखी ज्वर, तृषा और प्रमेह आदि। इसकी दाँतुन दाँतों को दृढ़ बनाती है।

## बिच्छू का विष दूर करने के लिए

नीम के पत्ते या जड़ को मुँह में चबाकर बिच्छू द्वारा काटे गए व्यक्ति के कान में फूंक मार दें तो विष उतर जाता है।

## विष दूर करने के लिए

अधिक परिमाण में नीम के पत्तों पर रोगी को लिटा देने से तीव्र विष का प्रभाव भी शान्त हो जाता है।

## महा वशीकरण सिद्ध प्रयोग

शनिवार को जब किसी की मृत्यु हो, तब यह करें कि एक मिट्टी के पात्र में खिचड़ी बनाकर श्मशान भूमि में ले जावें और जिस स्थान पर मुर्दे को जलाया गया हो, वहाँ उस खिचड़ी को बिखरे दें।

जब मुर्दा जलाकर सभी व्यक्ति लौट जायें और उस फैली हुई खिचड़ी को कौए खाने लगें तब बर्तन में जो खिचड़ी शेष रह गई हो, उसे उठाकर चल दें, पीछे मुड़कर न देखें और रास्ते में सर्वप्रथम सामने जो भी नीम का पेड़ मिले उस पर मिट्टी के पात्र को दे मारें, हांडी के फूट जाने पर उसकी खिचड़ी के जो चावल नीम के पेड़ से चिपक जायें उन्हें लेकर अलग रख लें, और जो नीचे जमीन पर गिर पड़ें उन्हें लेकर अलग रख लेवें, फिर दोनों स्थान के चावलों को अलग-अलग गूग्गल की धूनी देकर किसी चौराहे पर गाड़ दें तथा प्रत्येक शनिवार को उसी स्थान पर 1 बताशा, गुग्गल व थोड़ी-सी शराब का भोग चढ़ाते रहें।

इस क्रिया को करते हुए जब 7 दिन निकल जाएँ तब गाढ़े गये दोनों स्थान के चावलों को बाहर निकालकर अपने घर ले आएँ, तत्पश्चात जब किसी नारी को मोहित करना हो, उस समय उसके शरीर पर नीम से चिपके हुए चावलों के दानों को डाल दें तो वह नारी मन, वचन, तन और धन से साधक के वशीभूत होकर दासी बनी रहेगी, प्रेम समर्पिता रहेगी।

जब कभी उससे मन भर जाये, उसे छोड़ना चाहें, तब उसे जमीन पर पड़े हुए चावल खिला दें तो वह स्वयं ही आँखें फेर कर अलग हो जायेगी और इस तरह आपकी मनोकामना पूरी होगी।

इसका मंत्र हमसे पत्र डालकर आप प्राप्त कर लें। (मेरा सिद्ध प्रयोग है।)

## प्रसव पीड़ा दूर करने के लिए

प्रसव पीड़ा से पीड़ित महिला की कमर पर नीम की जड़ बाँधने से तुरन्त पीड़ा से राहत होती है, और प्रसव सुगम हो जाता है।

## सर्प विष दूर करने के लिए

चैत्र मास की मेष संक्रान्ति में मसूर की दाल के साथ नीम की पत्तियों को खाने से एक वर्ष तक विषैले सर्प का भी विष नहीं चढ़ता।

## बिच्छू के विष को दूर करने के लिए

नीम के पत्ते और कड़वा तेल दोनों को मिलाकर खूब औटावें और उसी भाप से सेंकने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

## पेट के कीड़ों को दूर करने के लिए

नीम के फल को पीसकर नाभि के नीचे लेप करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

## मासिक धर्म के लिए

नीम की सात पत्तियाँ लेकर अदरक के रस में पीसकर पिलाने से नीम की पत्तियों को थोड़े पानी में ही पकाकर ठोड़ी के नीचे गुनगुना ही बाँधने से मासिक धर्म खुल जाता है।

## मारण के लिए

अमुक शब्द की जगह पर शत्रु का नाम लेकर, चार अंगुल परिमाण एक नीम की लकड़ी लेकर उस पर शत्रु के सिर का बाल लपेट कर, उसी से शत्रु का नाम लिखें, तत्पश्चात सावधानी से उस लिखे नाम को चिता के अंगार पर धूप देवें, इस प्रकार तीन रात या सात रात तक धूप देने से शत्रु को प्रेत पकड़ लेता है। प्रयोग करने वाला व्यक्ति कृष्ण पक्ष की अष्टमी को प्रयोग आरम्भ करे, तथा चतुर्दशी तक समाप्त कर दे। नीचे लिखित मंत्र का प्रतिदिन 10001 बार जप करें।

### मारण मन्त्र

**ओं नमः काल संहाराय अमुक हन-हन।**
**क्री हुँ फट् भस्मी कुरु-कुरु स्वाहा।**

## कलह के लिए

विशाखा नक्षत्र में नग्न और विमुख होकर नीम के पेड़ की उत्तर गामी जड़ को मुख द्वारा काट लायें, इस जड़ को जिस घर में फेंक दिया जाये वहाँ सदैव विवाद और कलह होने लगती है। इस जड़ को दूर फेंक देने से कलह शान्त होती है।

# लाल रत्तियाँ (गुञ्जा फल)

रत्ती लता जाति का पौधा है, जो प्रायः छोटे-छोटे पेड़ों के तनों पर लिपटा होता है। वर्षा ऋतु में इसकी बेल उगती है, जिसके पत्ते इमली

के पत्तों जैसे होते हैं, इस पर सफेद तथा लाल रंगों तथा गुलाबी रंग के पुष्प आते हें। चैत्र मास में इसके बीज पक जाते हें, और लता सूख जाती है। इसके बीज को रत्ती कहते हैं, यह सर्वत्र प्राप्त होता है। यह दो प्रकार की होती हैं, यहाँ लाल रत्ती के प्रयोग का ही वर्णन है। पहचान के लिए देखें चित्र नं० 30।

## उच्चाटन के लिए

लाल रत्ती की जड़ तथा इसका पौधा क्रूर दिवस शनिवार के दिन जिसके आँगन में लगा दिया जाए तो शीघ्र ही उस आँगन के निवासियों का उच्चाटन होगा।

## प्रसव के लिए

1. रत्ती की उत्तरगामी जड़ को खोदकर लायें और गर्भिणी नारी के कमर में बाँध दें तो तत्काल प्रसव होगा।
2. रत्ती की बेल के उत्तर दिशा में लगे फल लेकर गर्भिणी नारी के केशों में बाँधने से सुख से प्रसव होता है, अथवा उसी फल को पीसकर योनि में लेप करने से भी सुख से प्रसव होता है।
3. पुष्य पक्षत्र युक्त रविवार को गुंजा फल के पौधे की जड़ लाकर, नीले सूत से एक को कमर में और दूसरी जड़ को सिर में बाँध देने से तत्काल प्रसव हो जाता है।

## वशीकरण के लिए

गुंजा की जड़ और पंचमल को एकत्र करके मंत्र का पाठ करके जिस स्त्री को दिया जायेगा वही वशीभूत होगी।

# रक्त गुञ्जा कल्प

**दोहा–** गुंजा की गति कहत हौं कौतुक चरित अपार।
गौरी ते शिव कहत हैं, सर्व कल्प को सार॥1॥
मारण तारण वशकरण राजा मोहन अंग।
उच्चाटन इह करत हैं वचन सिद्ध दलि भंग॥2॥
भूत प्रेत ग्रह डाकिनी यक्ष वीर वेताल।
गंजा की जड़ के सुनौ कौतुक माया जाल॥3॥
बहुत चरित अगणित कहै सकल सिद्धि की खान।
जो चाहै सोई करै साधन के वरदान॥4॥
शिव आनन्द यह गुंज है ज़ुगत गुप्त अरु ज्ञान।
या सत् गुरुसों भेद लखि साधो सन्त सुजान॥5॥
अब याको साधन कहौं यथा योग्य उपदेश।
जो साधै तो सिद्ध है कसर नहीं लवलेश॥6॥
पुष्य होय आदित्य कूँ जब लीजै यह मूल।
शुक्रवारी रोहिणी ग्रहण होय अनुकूल॥7॥
कृष्ण पक्ष की अष्टमी हस्त नक्षत्र जु होय।
चौदश स्वाती शतभिषा पुन्योकू ले सोय॥8॥
अर्द्धनिशा कारज करे मन की संज्ञा खोय।
धूप दीप कर लाइये धरै दूध सों धोय॥9॥
जो काहू नरनारिकू विष कोई को होय।
विष उतरे सब तुरन्त ही जड़ी पिलावे धोय॥10॥
जो घिस लावै भाल में सभा मध्य नर जाय।
मान मिलै अस्तुति करै सब ही पूजे पाँय॥11॥

हाँजी हाँजी सब करें जो वह कहै सु सांच।
एक जड़ी की जुगुतिसूं, सबै नचावै नाच॥12॥
ताँबे मूल मढ़ायकै, बाँधे कटिसूं सोय।
नवें मास वा नारिके, निहचै बेटा होय॥13॥
ऋतुवन्ती के रक्तसों, अंजन आँजै कोय।
देखत भाजै सैन सब, महा भयानक होय॥14॥
काजर हू घिसि आँजिये, मोहै सब संसार।
गाली दे दे ताड़िये, तऊ लगा रहे लार॥15॥
मधुसूं अंजन आंजिये, दिखे वीर बेताल।
जोइ मंगावे वस्तु कूं, लै आवे सो हाल॥16॥
जो घिसकै लेपन करै, दूध संग सब अंग।
भूत प्रेत सब अक्षय गण, लगे फिरैं, सब संग॥17॥
घिसके रुई लगाइये, पाकि धरै बनाय।
फेर भिजावे तेल में, दीपक देय जलाय॥18॥
करो अचम्भो सबन में, घर समान दरशाय।
सात महल के बीच सूं, लावे पलंग उठाय॥19॥
जो घृत में घिसकै करै, लेप मूत्र नर ताय।
भोग शक्ति बाढै अमित, मद बहु मोद बढ़ाय॥20॥
अजा मूत्र में रगडिके (लेप) दे जो हाथ।
करे दूर की बात वो, रहे यक्षिणी साथ॥21॥
गोरोचन के संग घिस, लिखिये जाको नाम।
मृत्यु होय बाकी तुरत, नहीं वैर को काम॥22॥
लिंग पत्र के अर्क सूं, घिसिये केवल नाम।
भूत प्रेत अरु डाकिनी, देखत नसैं तमाम॥23॥

स्याउ संग वा रगड़िकै, तलुआ तले लगाय।
आँख चीम के पलक में, सहस्त्र कोस उड़जाय ॥24॥
जो घिस आँजै पीस के बन्दी छोड़ कहाय।
बंदि पड़े छूटे सभी, बिनही किये उपाय॥25॥
जो गुलाब संग याहि घिस, नाड़ी लेप कराय।
घड़ी चारकूं जी परै, मुरदा सहज सुभाय॥26॥
फिर अंकोल के तेल में, घिसि के आँजे कोय।
धन दीखै पाताल को, दिव्य दृष्टि जो होय॥27॥
जो बाघिनि के दूध में, घिस चुपरै सब अंग।
सर्व शस्त्र लागे नहीं, बढ़कर जीते जंग॥28॥
घिसकै तिल के तेल में, मर्दन करै शरीर।
दीखै सब संसार कूं, महावीर रणधीर॥29॥
जो अलसी के तेल में, घिसिये सहत मिलाय।
कोढ़ी के लपेन करें, कंचन तन हो जाय॥30॥
जो कोई संसार में, अन्धा आँजे कोय।
सात दिवस पर आँजिये, दृष्टि चौगुनी होय॥31॥
श्याम नगद संग रगडिकै, बीसों नख लिपटाय।
जो नर होय कुसारगी, देखत वश हो जाय॥32॥
कस्तूरी सूं आँजिये, प्रातः समय लौलाय।
मौत जु लखिये सबन की, काल पुरुष दरसाय॥33॥
गंगा जलसूं आँजिये, दोनों नेत्रन माहिं।
बरषा बरसै भूल की, यामें संशय नाहिं॥34॥
जो आँजै निज रक्त सूं, भरके दोऊ कोय।
देखै तीनों लोक को अपनी आँसन सोय॥35॥

जो आँजै निज मूत्र सूं, खुलै रागिनी राग।
जो घिस पीवै दूध सूं, हाये सिद्ध सो भाग॥36॥
रक्त गुंज यह कल्प है, सूक्षम कह्यो बनाय।
जो साधै सो सिद्ध हो, जामें संशय नाय॥37॥

॥ इति रक्त गुञ्जकल्प समाप्त ॥

# श्वेत गुञ्जा

रत्ती लता जाति का पौधा है, जो प्रायः वृक्षों झाड़ियों और बाडों पर लिपटा होता है। वर्षा ऋतु में इसकी बेल उगती है जिसके पत्ते इमली के पत्तों जैसे होते हैं और गुलाबी रंग के पुष्प होते हैं। चैत्र मास में इसके बीज पक जाते हें और लता सूख जाती है। इसके बीज को रत्ती कहते हैं जो सोना आदि तोलने के काम में लाई जाती है। यह कम ही मिलती है। यह दो प्रकार की होती है।

1. लाल रत्ती।
2. सफेद रत्ती।

यहाँ पर सफेद रत्ती के प्रयोग का ही वर्णन किया गया है। पहचान के लिए देखें चित्र नं० 31।

## विष दूर करने के लिए

रत्ती की जड़ को पानी में धोकर, उस पानी को विष के रोगी को दें तो विष दूर हो जाता है।

## पुत्र प्राप्ति के लिए

रत्ती की जड़ को कमर में धारण करके भोग करने से पुत्र प्राप्त होता है।

## गुप्त शक्तियों के दर्शन के लिए

रत्ती की जड़ को शहद के साथ पीसकर, अंजन की भाँति प्रयोग करने से गुप्त शक्तियों के दर्शन होते हैं।

## कोढ़ दूर करने के लिए

रत्ती की जड़ का चन्दन की भाँति तिलक करने से आकर्षण होता है।

## आकर्षण के लिए

रत्ती की जड़ का चन्दन की भाँति तिलक करने से आकर्षण होता है।

# रक्त चन्दन

### लाल चन्दन के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| हिन्दी | लाल चंदन |
| बंगाली | रक्त चंदन |
| गुजराती | रताजली |
| अंग्रेजी | रैड सैंडल वुड |
| फारसी | संदल सुर्ख |
| अरबी | संदले अहमर |
| पंजाबी | चनन |

चन्दन के वृक्ष होते हैं, जो प्रायः आसाम में पास जाते हैं। इसकी लकड़ी

भारी होती है, जो पानी में डूब जाती है। रक्त चन्दन की लकड़ी लाल रंग की सुगन्धित होती है। यह प्रायः सब पंसारियों से मिल जाता है।

चन्दन का गुण शीतल है, जो ठंडा, हल्का दिल को प्रसन्न करने वाला, सुगन्धित और सुन्दरता वर्धक है। चन्दन कई रोगों को शान्त करता है, जैसे—तृषा, थकान, रक्त विकार, खफकान, सफरावी दस्त, सिर दर्द, वात, पित्त, कफ, कृमि और वमन आदि। इसका गुण शरद खुश्क है।

इसकी लकड़ी की पहचान के लिए देखें चित्र नं० 32 चंदन दो प्रकार का होता है।

1. श्वेत चन्दन।
2. रक्त चन्दन।

यहाँ रक्त चन्दन के ही प्रयोग दिए गए हैं।

## शत्रु के यहाँ झगड़े के लिए यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७६ | ७९ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ८३ | ४८ |
| ८५ | ८० | ८ | १ |
| ५ | ६ | ८१ | ८४ |

कुम्हार के आवे की ठीकरी पर लाल चन्दन से इस यन्त्र को लिखकर शत्रु के घर डाल देने से शत्रु के घर में झगड़ा होने लगता है।

## व्यापार वृद्धि के लिये यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७३ | ८० | २ | ७ |
| ६ | ३ | ७७ | ७६ |
| ७६ | ४ | ८ | ० |
| ४ | ४ | ७५ | ७४ |

इस यन्त्र को लाल चन्दन से दीपावली के दिन दुकान पर लिखने से व्यापार में लाभ होता है।

## दुष्ट नजर से रक्षा के लिए यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४ | २ | ६ | ८ |
| २ | ४ | ८ | ६ |
| ६ | ८ | ४ | २ |
| ८ | ६ | २ | ४ |

इस यन्त्र को रक्त चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर तथा धूप-दीप

देकर, धारण करने से नजर आदि नहीं लगती।

## सूखा रोग दूर करने के लिये यन्त्र

| ८ | ८ | ८ |
|---|---|---|
| ३३४ | ३३४ | ३३४ |
| ३३४ | ३३४ | ३३४ |
| ३३४ | ३३४ | ३३४ |
| ७ | ७ | ७ |

यह यन्त्र लाल चन्दन से लिखकर घोलकर रोगी को पिलायें तो सूखा रोग दूर होगा।

## श्वेत चंदन

### श्वेत चन्दन के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| हिन्दी | चन्दन श्वेत |
| बंगाली | चन्दन |
| गुजराती | मुखड |
| अंग्रेजी | सेंडल वुड |
| फारसी | संदल सफेद |

| **अरबी** | **संदले अबीयद** |
|---|---|
| **पंजाबी** | **चनन** |

इसके वृक्ष भी आसाम में होते हैं, रक्त चन्दन से इसकी भिन्नता केवल इतनी है कि इसकी लकड़ी श्वेत होती है। यह भी पंसारी की दुकान से मिल जाता है, यह अष्टगंध में प्रयोग होता है। इसके शेष गुण प्रायः रक्त चन्दन जैसे ही हैं।

इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 22 देखें।

## बुरी नजर दूर करने के लिये

इस यन्त्र को भोजपत्र पर श्वेत चन्दन से लिखकर बाँधने से बुरी नजर दूर होती है।

**यन्त्र**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७२ | ८१ | ३३ | ४६ |
| ६१ | ८२ | ६ | ११ |
| २५ | ३७ | ४६ | ५० |
| ४५ | २७ | ६ | १ |

# शीतला देवी का यन्त्र

## यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | ४४ | ६ | ५१ |
| ७४ | ८ | ४ | ५२ |
| ३ | २६ | ८७ | ६१ |
| ६ | ६ | ३६ | ४५ |

इस यन्त्र को भोजपत्र पर श्वेत चन्दन से लिखकर, गूगल की धूप देकर, जिसके शीतला निकली हो, उसके गले में ताबीज बनाकर पहनने से शीतला दूर होगी।

# कर्ण पीड़ा दूर करने के लिये

## यन्त्र

| | | |
|---|---|---|
| | ज | व |
| क | ग | ज |
| छ | छ | द |

इस यन्त्र को श्वेत चन्दन से लिखकर कान पर बाँधे तो कर्ण पीड़ा दूर होगी।

## गीदड़ सिंगी

सियार सिंगी (श्रृगाल श्रृंग) गीदड़ से प्राप्त होती है। जिस सियार की आयु बहुत अधिक होती है, उसके सिर पर एक गाँठ उत्पन्न हो जाती है, जिसे गीदड़ सिंगी कहा जाता है। जब उस गीदड़ के सिर पर यह सींग पैदा होता है, तब वह अपना शिकार नहीं कर सकता। जब कभी इसका शिकार, इससे बचकर किसी वृक्ष आदि पर चढ़ जाता है, तब वह गीदड़ उस शिकार की तरफ देखता है, और उसका शिकार स्वतः ही भूमि पर गिर पड़ता है, जिसे खाकर गीदड़ अपनी भूख मिटाता है। ऐसे गीदड़ की शिकारी लोग पहचान कर लेते हैं, और अवसर पाकर उस गीदड़ को मार लेते हैं, तथा उसकी सींग वाली गाँठ निकाल लेते हैं। जिस व्यक्ति के पास अथवा घर में यह सिंगी होती है, उसको विजय और सफलता प्राप्त होती है, तथा संकट दूर हो जाते हैं।

पहचान के लिए चित्र नं० 34 देखें।

सियार सिंगी को कण्ठ में धारण करने से साधना बिना बाधा के पूर्ण हो जाती है।

तान्त्रिक ग्रन्थों में कहा गया है, कि इसके बालों को काटना नहीं चाहिए, इस तरह करने से इसका प्रभाव नष्ट हो जाता है।

सियार सिंगी को चाँदी अथवा ताँबे की डिबिया में रख कर इसमें असली सिन्दूर-लौंग, कपूर, चावल, उड़द के कुछ दाने तथा इलायची आदि रख के इसको गणपति जी के मूल मंत्र से अभिमन्त्रित करके इस तरह प्रयोग करें।

(1) इसका सिन्दूर जिसकी मांग में भर देंगे वही गुलाम होगा।
(2) जो स्त्री इसके लौंग अपने पति को खिला दे तो पति वश में हो जाता है।
(3) इसकी इलायची जिस स्त्री को खिला देंगे वही मोहित होगी।
(4) चावल शान्ति कार्य के लिए प्रयोग करें।

## सर्वजन वशीकरण मन्त्र

**ओं नमो आदेश गुरु को।**
**राजा प्रजा मोहू।**
**ब्राह्मण बणिया मोहू।**
**अकाश पताल मोहू।**
**दस दिशाए मोहू।**
**जो रामचन्द्र।**
**परमणियां अमुक को।**
**अमुक से मोहे।**
**गुरु की शक्ति**
**मेरो भक्ति।**
**फुरो मन्त्र।**
**ईश्वरो वाचा।**

**विधि**–रात्रि के समय लाल वस्त्र बिछाकर उस पर सियार सिंगी को रख दें और सामने दूध तथा मिठाई भोग के लिए रख दें। दीपक और अगरबत्ती जलाकर उपरोक्त मन्त्र का 21000 जप करे तो यह मंत्र सिद्ध होगा।

जब इस सिद्ध मन्त्र का प्रयोग करना हो, तो इस सिद्ध सियार सिंगी

को कण्ठ में धारण करके श्री रामचन्द्र जी का ध्यान करके चौराहे की धूल की चुटकी उठाकर इस मंत्र से 1008 बार अभिमन्त्रित करें, अमुक के स्थान पर उन दोनों का नाम उच्चारण करें जिन्हें मोहित करना हो।

फिर वह चुटकी की धूल जिसके सिर पर डाल दी जायेगी वही मोहित होकर गुलाम की तरह कार्य करेगा।

## पति वशीकरण मंत्र

**ओं ह्रीं भोगप्रदा भैरवी मातंगी अमुक।**

**विधि**–किसी पात्र में सियार सिंगी रख के तेल का दीपक जलाकर तथा भोग के लिए फल आदि रखकर, इस मंत्र का 21 दिन में 410000 जाप करें, अमुक शब्द के स्थान पर पति का नाम उच्चारण करें, इस तरह यह प्रयोग सिद्ध होगा।

जब तक इस सियार सिंगी को स्त्री अपने पास रखेगी तब तक इसका पति उसका मुरीद (गुलाम) रहेगा।

## विवाह के लिए मंत्र

**ओं क्ले मम (अमुक) कार्य सिद्धि।**
**करि करि जनरंजिनि स्वाहा॥**

**विधि**–यह प्रयोग मंगलवार से प्रारम्भ करें, लाल आसन पर सियार सिंगी को रखकर सामने अगरबत्ती व शुद्ध घी का दीपक जलाकर तथा अपने पास मिठाई और फल भोग के लिए रखकर इस मंत्र का 51000 जप करने पर कार्य सिद्ध होता। अमुक के स्थान पर अपना नाम उच्चारण करे, इस तरह 11 दिन प्रयोग करने से शीघ्र ही मनोवांछित स्थान पर विवाह हो जाता है।

## मतभेद (गृहस्थ बाधा) दूर करने के लिए मंत्र

**ओं मदने मदने देवी मामलियम संगे देह देह श्री स्वाहा।**

**विधि**–लाल वस्त्र पर सियार सिंगी को रखकर अगरबत्ती व घी का दीपक जलाकर, भोग आदि रखकर इस मंत्र का 11 दिन में 21000 जाप करें तो, गृहस्थ बाधा दूर होगी।

यह सभी प्रयोग मेरे सिद्ध हैं।

# गोरोचन (मंगला)

### गोरोचन के अन्य नाम

**मंगला**
**बन्दनीया**
**भूत विद्रावणी**
**मेध्या**
**गोपित्त**
**शिवा**

गोरोचन गाय का पित्ता होता है, उसके निश्राव-वाही का रस है, जो नाभी के पास होता है, और आम के जैसा होता है, यह आसाम से प्राप्त होता है।

गाय के पित्ते को प्राप्त करके कुछ समय तक छाया में सुखाकर, इस रस को ठोस किया जातां है।

गोरोचन का प्रयोग अष्ट गंध बनाने में और अनेक औषधियों में होता है। इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 35 देखें।

शुद्ध गोरोचन हमसे प्राप्त किया जा सकता है, तंत्र शास्त्र में शुद्ध गोरोचन का ही प्रयोग करना चाहिए, अन्यथा असफलता ही प्राप्त होगी।

## ग्रह दोष दूर करने के लिए

गोरोचन को धारण करने से ग्रह दोष दूर होते हैं।

## मिर्गी दूर करने के लिये

गोरोचन 2 मासे गुलाब के जल से दिन में 3 बार 7 दिन तक सेवन करें तो मिर्गी दूर होगी।

## वशीकरण के लिए

गोरोचन का तिलक करने से वीशकरण होता है।

## धन वृद्धि के लिये

गोरोचन को धन स्थान पर रखने से धन की वृद्धि होती है।

# वट वृक्ष का बांदा

वट के तने के ऊपर अथवा टहने की कोटर में किसी अन्य पेड़ के उगने को वट का बांदा कहते हैं। इसकी पचान के लिए देखें चित्र नं० 36।

## युद्ध में विजय के लिये

आर्द्रा नक्षत्र में वट का बांदा प्राप्त कर धारण करने से, युद्ध में विजय की प्राप्ति होती है।

## मैथुन की लिये

अश्विनी नक्षत्र में वट का बांदा ग्रहण कर कमर पर धारण करने से मैथुन शक्ति घोड़े की भाँति हो जाती है।

## नीम का बांदा

नीम की पहचान के पीछे पड़े तथा नीम के बांदे की पहचान के लिए चित्र नं० 37 देखें।

## दुर्भाय के लिए

ज्येष्ठा नक्षत्र में नीम का बांदा प्राप्त कर जिसके घर में डाल देंगे, वहाँ दुर्भाग्य प्रारम्भ हो जाएगा।

## पीपल

पीपल एक पवित्र वृक्ष है, हिन्दू धर्म में इसे ब्रह्म वृक्ष कहते हैं और पूज्य समझते हैं। यह वृक्ष बहुत बड़ा होता है और भारत में प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है। इसके पत्ते गोल बड़े और नोकीले होते हैं।

पहचान के लिए चित्र नं० 38 देखें।

## पीपल का बाँदा

(1) अश्विनी नक्षत्र में पीपल का बाँदा प्राप्त करके गाय के दूध के साथ सेवन करने से गर्भ की प्राप्ति होती है।

(२) पीपल के बाँदे का गृह में स्थापित करने से हानि नहीं होती।

## पीपल की कील

अश्विनी नक्षत्र में पीपल की जड़ की दस अंगुल लंबी कील लेकर किसी के द्वार पर गाड़ देने से वह लम्बी यात्रा पर चल देगा।

## ज्वर दूर करने के लिये

पुष्य नक्षत्र में पीपल की जड़ की दातुन बनाकर करने से ज्वर दूर होता है।

## कामना के लिये

पीपल के पत्ते पर पुत्र कामना के लिए यन्त्र लिखा जाता है।

## प्रेत सिद्ध करने का मन्त्र

**ओं एं ह्रीं नमः ॐ ह्रं धनं धनं कुरु-कुरु स्वाहा।**

शौच कर्म के पश्चात बचा हुआ जल उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके पीपल के वृक्ष पर नित्य प्रति चढ़ाता रहे। इस तरह 6 मास तक प्रयोग करने से वहाँ प्रेत प्रकट होगा, तब उससे इच्छानुसार वर मांग लेवें तथा भले काम के लिए प्रयोग करे।

# शीतला दूर करने का यन्त्र

## यन्त्र

| श्री० | श्री० | श्री० | श्री० |
| --- | --- | --- | --- |
| श्री० | श्री० | श्री० | श्री० |
| श्री० | श्री० | श्री० | श्री० |
| ०० | ०० | ०० | ०० |

इस यन्त्र को पीपल के पत्ते पर अष्टगंध से लिखकर चूल्हे पर बांधकर रखें तो शीतला शान्त होगी।

## वट वृक्ष

वट का वृक्ष भी प्रायः सभी स्थानों पर प्राप्त हो जाता है, जो बहुत बड़ा होता है और पत्ते लम्बे-चौड़े और अग्रभाग से गोल होते हैं। पंजाबी में इसको बोहड़ कहते हैं।

इसकी पचान के लिए चित्र नं० 39 देखें।

## धन प्राप्ति के लिये

आप ऐसे बरगद का वृक्ष ढूंढ़े जिस के नीचे एक छोटा-सा बरगद का पौधा उगा हो उसको सिद्ध योग में प्राप्त करके घर में लाकर धूप

दीप करें तो अन्न तथा धन की बहुत प्राप्ति होगी।

## वट की कील

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के संयोग में वट की जड़ प्राप्त करके स्त्री अपनी भुजा पर धारण करे तो वन्ध्या स्त्री को भी पुत्र की प्राप्ति होगी।

## यक्षिणी सिद्धि मन्त्र

**ओं नमः श्रन्द्राधावा कर्णकारथ स्वाहा।**

**विधि**–रात के समय वट वृक्ष पर चढ़कर ऊपर लिखा मंत्र सवा लाख जप करें, जप समाप्त होने पर 7 बार इस मंत्र से अभिमन्त्रित कांजी द्वारा मुख धोयें तो इस प्रकार तीन मास तक यह प्रयोग करने से यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को रसायन और भोजन, द्रव्य प्रदान करती हैं

## विचित्रा यक्षिणी साधन मंत्र

**ओं विचित्रा ह्रीं क्लीं स्वाहा।**

**विधि**—वट वृक्ष के नीचे बैठकर, पवित्र होकर, उपरोक्त मंत्र का एक लाख जप करें, तथा बन्धक के फूल, शहद, अन्न तथा दूध मिला के हवन करें तो विचित्रा यक्षिणी सिद्ध होकर मनोवांदित वर देती है।

(डामर तन्त्र से) भूत-प्रेत सिद्ध करने के लिए मेरा टीका सहित प्रकाशन डामर तन्त्र देखें।

## एरण्ड

एरण्ड प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है, इसके पेड़ बहुत बड़े

विस्तार के नहीं होते, जो प्राय: खेतों के किनारे लगे होते हैं, और खाली पड़े स्थानों में भी उग पड़ते हैं। इसके पत्ते हरे एक फुट चौड़े होते हैं, और फूल घुण्डीदार होते हैं, इसके फल कांटेदार गोल होते हैं।

एरण्ड दो प्रकार का होता हैं

(1) लाल एरण्ड

(2) श्वेत एरण्ड

लाल एरण्ड की पहचान के लिए देखें चित्र नं० 40

## एरण्ड वशीकरण मन्त्र

**ओं नमो काल भैरव काली रात।**
**काला आया आधी रात।**
**चलै कतार बाधूं।**
**तूं बावन वीर।**
**पर नारी सो राखै सीर।**
**छाती धरिके बाको लाओ।**
**सोती हाये जगा के लाओ।**
**बैठी होय उठा के लाओ।**
**शब्द साचा पिण्ड काचा।**
**फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।**
**सत्य नाम आदेश गुरु का।**

जब रविवार को दीपावली पड़े तो, बायें हाथ से मंत्र जपते हुए एक झटके से लाल एरण्ड को उखाड़ लायें, फिर इसकी जड़ के 21 टुकड़े करके इस मंत्र से 2100 बार अभिमन्त्रित करके इन टुकड़े की माला तैयार करें, इस सिद्ध माला का जिस स्त्री से स्पर्श करवा देंगे वही मोहित होकर सेज पर हाजिर होगी।

## पीपल का बाँदा

पीपल के तने के ऊपर अथवा टहने की कोटर में किसी अन्य पेड़ के उगने को पीपल का बांदा कहते हैं।

इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 41 देखें।

### पुत्र प्राप्ति के लिये

अश्विनी नक्षत्र में पीपल का बांदा प्राप्त करके गाय के दूध के साथ सेवन करने से बांझ स्त्री भी पुत्र रत्न प्राप्त कर सकती है।

## अन्जीर (फिगट्री)

### अंजीर के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | अंजीर |
| हिन्दी | अंजीर |
| अंग्रेजी | फिगट्री |
| फारसी | अंजीर |
| अरबी | तीन |
| पंजाबी | हजीर |
| बंगाली | अंजीर |
| मराठी | अंजीर |
| गुजराती | अंजीर |
| कर्णाटकी | मूडू येडू |
| लैटन | फाईकसोरिका |

अंजीर का पौधा मध्यम विस्तार का होता है, और सभी स्थानों पर प्राप्त हो जाता है। इसके पत्ते ढाक के पत्तों जैसे गोल और बड़े-बड़े होते हैं। अंजीर के फल को विलायती मेवा भी कहते हें, जो बहुत मीठा होता है, और काले-लाल रंग का होता है।

अन्जीर के सेवन से कई रोग शान्त होते हैं, जैसे—मृगी, फाज, कफ, मूत्र बन्द होना, गुर्दा पतला पड़ जाना, पाचन क्रिया बढ़ाना, रक्त विकार, अधरंग आदि। इसका ताजा फल सूखे फल से अधिक लाभकारी है। अन्जीर का शर्बत खाँसी दूर करता है। अन्जीर का गुण गर्मतर है।

इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 42 देखें।

## पलाश ढाक

पलाश को ढाक अथवा रक्त पुष्प भी कहते हैं, जो प्रायः भारतवर्ष में सभी स्थानों पर प्राप्त हो जाता है। यह बहुत बड़ा वृक्ष होता है। जिसके पत्ते गोल और बड़े-बड़े होते हैं। इस वृक्ष पर मार्च अप्रैल में केवल रक्त, तथा सफेद फल़ आते हैं और पत्र भी तत्पश्चात निकलते हैं।

इसके वृक्ष की पहचान के लिए चित्र नं० 43 देखें।

### दिन में तारे देखने के लिये

सफेद फूल वाले ढाक के वृक्ष पर चढ़ करके भरी दोपहर में भी आकाश को देखने से सितारे दिन में दिखाई देंगे।

### झगड़े के लिए

ढाक की लकड़ी की जड़ सहित चूर्ण रवि पुष्य नक्षत्र में ला करके

जिन दो व्यक्तियों के मध्य डाला जायेगा उनमें झगड़ा हो जायेगा।

## रोग दूर करने के लिए

पलाश की लकड़ी की भस्म और हरिताल के चूर्ण को इकट्ठा मिलाकर केले के पेड़ के रस के साथ पीस कर रोग युक्त स्थल पर लेपन करने से समस्त रोग साफ हो जाते हैं।

## ज्वर दूर करने के लिए

लाल पलाश की जड़ को सूती धागे में भुजा पर बाँध देने से ज्वर दूर होता है।

## बन्ध्या होने के लिए

ढाक के बीज शहद व घी में मिलाकर ऋतुकाल में योनि में रखने वाली युवती बन्ध्या हो जाती है।

## पुत्र प्राप्ति के लिए

ढाक (पलाश) के पाँच कोमल पत्ते किसी महिला के दूध में पीस करके बाँझ महिला मासिक धर्म को 4 दिन स्नान कर के खा लेवे तो पुत्र की प्राप्ति होती है।

# इमली

## इमली के अन्य नाम

| संस्कृत | तिंतडी |
| --- | --- |

| | |
|---|---|
| हिन्दी | इमली |
| तैलंगी | चिताचेट्ठु |
| अंग्रेजी | टिमेरिंडट्री |
| फारसी | तिमरहिन्दी |
| अरबी | हवारा |
| पंजाबी | इंवली |
| बंगाली | तेतुल |
| कर्णाटकी | हुणीसे |
| गुजराती | आबली |
| मराठी | चिंच |
| नैपाली | तेतुरसे |
| पहाड़ी | तेतुरसे |

इमली के पेड़ भी भारत में सभी स्थानों पर होते हैं। इसके पेड़ भी बड़े-बड़े होते हैं, और यह सदाबहार पेड़ हैं। इसके पत्ते छोटे-छोटे शीरिष के पेड़ जैसे होते हैं। इस पर फल ग्रीष्म ऋतु में आते हैं और यह सघन छायादार वृक्ष है।

इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 44 देखें।

## चतैन्य के लिए

नदी, तालाब, पोखर आदि किसी में कोई व्यक्ति डूब जाये और निकलने के उपरान्त वह व्यक्ति मृत के समान दृष्टि गोचर हो, दर्शक गण उसे मरा समझकर निराश हो गये हों, तब डूबने वाले व्यक्ति को इमली की ताजा पत्तियों के रस से भली प्रकार तर करके तेज धूप में रोगी को लिटा दें तो रोगी व्यक्ति चैतन्य हो जाता है।

## विशाल यक्षिणी साधन

**मन्त्र–ओं ह्री विशाले दू दूं क्लीं एहीं स्वाहा।**

इस मन्त्र को इमली के वृक्ष के नीचे बेठकर 1000 मन्त्र प्रतिदिन 27 दिन तक जपने से विशाल यक्षिणी वश में हो जाती है, और एक उत्तम पदार्थ प्रदान करती है। जो कोई उसको अपने शरीर पर मलता है, वह सुन्दर हो जाता है।

# बेरी

बेरी एक प्रसिद्ध पेड़ है, जो काँटेदार फलदार वृक्ष है हमारे यहाँ इस पेड़ को बच्चा-बच्चा जानता है। बेरी का पेड़ भी प्रायः सभी स्थानों पर प्राप्त हो जाता है। इसका पेड़ काफी ऊँचा होता है, और इसके पत्ते गोलाकार और हरे होते हैं। इस की पहचान के लिए चित्र नं० 45 देखें।

## बेरी का बांदा

1. स्वाती नक्षत्र में बेरी का बाँदा ग्रहण करके देवता से निवेदन करने से देवता मनोकामना पूरी करता है।
2. स्वाती नक्षत्र में बेरी का बाँदा धारण कर, जिस किसी के पास जाकर भी निवेदन करे तो निवेदन पूरा होगा।

## बेरी की कील

विशाखा नक्षत्र में बेरी की जड़ लेकर आठ अँगुल परिमाण की कील बनाकर के केले के बाग में गाड़ने से केले का फल नष्ट हो जाता है।

# सीरीष (सिरसा पेड़)

## सीरीष के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| हिन्दी | सिरषा |
| पंजाबी | सरीह |
| संस्कृत | सीरिष |

सीरीष को सरीह भी कहते हैं, जो प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है, इसके पेड़ बड़े-बड़े और छोटी-छोटी हरी पत्तियाँ होती हैं, तथा इसका तना मोटा होता है। इसकी पहचान के लिए देखें चित्र नं० 46।

## सीरीष की कील

1. सीरीष की कील घर में गाड़ने से जादू-टोना दूर होता है। यह प्रयोग रवि पुष्य नक्षत्र में ही करें।
2. रवि पुष्य नक्षत्र में सीरीष की बड़ी कील बना करके पशु के गले में डाले तो पशु प्रसन्न रहता है।

# रीठा

रीठा का वृक्ष बहुत बड़ा होता है। यह प्रायः हर प्रदेश में प्राप्त हो जाता है। इसके पत्ते हरे होते हैं और इस पर फल मई के महीने में लगते हैं, जो पककर भूरे से हो जाते हैं। रीठा का फल तन्त्र में प्रयोग होता है, रीठा का फल सभी पंसारियों से मिल जाता है।

इसकी पहचान के लिए देखें चित्र नं० 47।

## गर्भ निरोध

ताजे पानी में रीठे के फल के थोड़े छिलके डालकर उबालें और जब पानी गर्म होने लगे तभी उसमें गर्भ धारण के बचाव की अभिलाषिणी कामिनी नारी का पेटीकोट डालकर थोड़ा सा ही जल शेष रहने पर औटावें, तब पात्र को अग्नि से उतार कर पेटीकोट को बिना निचोड़े छाया में सुखाकर समागम के समय नारी को पहना दें तो गर्भ कदापि नहीं ठहर पायेगा, यह सारी क्रिया नित्य करें।

## दृष्टि दोष दूर करने के लिए

रीठे में छिद्र करके रवि पुष्य नक्षत्र में बच्चे के गले में पहना देने से दृष्टि दोष दूर होता है।

### छुईमुई के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | लज्जालु |
| हिन्दी | लाजवंती |
| पंजाबी | छुईमुई |
| बंगाली | लाजुक |
| मराठी | लाजरी |
| गुजराती | दिशामणी |
| कर्णाटकी | मुदिदरे मुरटब |

**लैटन** **माईमोससेनस्बीना**

लाजवन्ती का पौधा सभी स्थानों पर प्राप्त हो जाता है, जिसकी ऊँचाई एक फुट के करीब होती है। इसकी शाखाएँ नीचे झुकी हुई और काँटेदार होती हैं तथा पत्ते छोटे होते हैं। इसके फूल जामनी, लाल रंग के होते हैं।

लाजवन्ती का पौधा स्पर्श करने से मुरझा जाता है और कुछ समय पश्चात अपनी पूर्व अवस्था में आ जाता है।

इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 49 देखें।

## वशीकरण के लिए यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६२ | ६१ | २ | ६ |
| ७ | ३ | ६५ | ६५ |
| ६७ | ६७ | ६ | १ |
| ४ | ६ | ६४ | ६६ |

इस यन्त्र को लाजवन्ती के रस से भोजपत्र पर लिखकर धारण करने से सभी लोग वश में हो जाते हैं।

## हार्निया (आँत) ठीक करने के लिए

लाजवन्ती के पौधे की जड़ शनिवार के दिन लायें। तत्पश्चात छल्ले जैसा मोड़ देकर कमर में धारण करने से हर्निया में लाभ होगा।

# अगस्त वृक्ष

## अगस्तिया के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| संस्कृत | अगस्तिया |
| हिन्दी | अगस्तिया हदगा |
| तेलंगी | अनीसे अविसि |
| अंग्रेजी | लार्ज फलावर्ड अगीट |
| बंगाली | वक |
| पंजाबी | अगस्तीया |
| कर्णातकी | अगसेपसरनु |
| तामिली | अरगति |
| मराठी | अगस्ता |
| लैटिन | एगाटीगलाडी फलौग |
| गुजराती | अगथिगो |

अगस्त का पेड़ मिलना सम्भव नहीं है, परन्तु कुछ स्थानों पर प्राप्त हो जाता है। इसकी ऊँचाई तीस फुट के लगभग होती है और पत्ते छोटे और सहंजने के समान होते हैं। इसके फल लाल और श्वेत दोनों प्रकार के होते हैं। अगस्त शीतल होता है और कई रोगों जैसे—कुष्ठ, पित्त और कफ आदि को शान्त करता हैं इसका गुण गर्म है।

इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 50 देखें।

## दिन में तारे देखने के लिए

अगस्त वृक्ष के फूलों का रस निकालकर उसमें सफेद सुरमा 21 दिन तक खरल करें, इसके बाद इस सुरमे को शीशी में बन्द कर लेवें, जब

यह सुरमा दोपहर को आँखों में काजल की तरह लगायें तो आपकी दिन के समय तारे दिखाई देंगे।

## विल्व वृक्ष

विल्व को बिल भी कहते हैं। इसके पेड़ बड़े-बड़े होते हैं और पत्ते गोल। जो आगे से तिरछे होते हैं। यह शिवालयों के निकट लगाया जाता है और शिव उपासना के काम आता है। शिवलिंग पर इसके पत्र चढ़ाने से शिव अति प्रसन्न होते हैं। विल्व वृक्ष भी सभी स्थानों पर प्राप्त हो जाता है। इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 48 देखें।

## कमल का पौधा

### कमल के अन्य नाम

| | |
|---|---|
| **संस्कृत** | **पुण्डरीक, रक्तपद्म, नीलपदम** |
| **हिन्दी** | **कमल** |
| **पंजाबी** | **नीलोफर** |
| **फारसी** | **नीलोफर, गुलनीलोफर** |
| **अरबी** | **गुलनीलोफर, करंबुलमा, बरद नीलेफर** |

कमल पुष्प के अनेकों नाम हैं। यह प्रायः सरोवरों और झीलों में पैदा होता है। इसकी जड़ पानी के नीचे कीचड़ में और गोल चौड़े पत्ते पानी के ऊपर तैरते रहते हैं, जो पानी से भीगते नहीं हैं। हरी लंबी नाल के ऊपर अनेक रंगों के कमल के फूल लगते हैं जो अति मनमोहक होते हैं। इसका गुण सर्द होता है।

इसकी पहचान के लिए चित्र नं० 51 देखें।

## कमल गट्टे की माला

कमल के पुष्पों की माला बनाकर, श्री लक्ष्मी जी का मंत्र जाप करने से शीघ्र सिद्धि मिलती है।

## निवेदन

हमारी प्रकाशित पुस्तकों में सभी विद्वान लेखकों ने विभिन्न प्राचीन मान्यताओं, प्रचलित किवदंतियों और दुर्लभ तथा लुप्तप्राय ग्रन्थों के आधार पर इन मन्त्र-तन्त्र विद्याओं और यन्त्रों को बनाने व उनके प्रयोग करने के ढंग का वर्णन पुस्तकों में किया हुआ होता है। प्रत्येक पुस्तक में दिए गये वर्णन उस विषय की जानकारी के लिए हैं। यदि कोई पाठक कोई भी उचित या अनुचित प्रयोग करता है तो वह उसके हानि-लाभ का स्वयं उत्तरदायी होगा। जानवरों व पशु-पक्षियों को मारना अब कानूनी अपराध है इसकी भूल न करें। अतः पाठक पुस्तक को पढ़कर कोई प्रयोग करने की चेष्टा न करें। उस प्रयोग करने से पूर्व किसी योग्य तान्त्रिक, मन्त्रवेत्ता व ज्योतिषी से पूरी जानकारी प्राप्त करना उचित होगा।

प्रकाशक, मुद्रक व विक्रेता को विषय वस्तु की जानकारी नहीं होती। अतः तत्संबंधी विस्तृत ज्ञान के लिए अन्य पुस्तकें पढें।

*प्रकाशक-लेखक-मुद्रक*

# चमत्कारी 55 पूजा यन्त्र

लेखक : **महामहिम पं. कुलपति मिश्र**

मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र तात्विक रूप से भिन्न-भिन्न वस्तु नहीं है ये एक ही शक्ति के तीन रूप हैं। इस शक्ति को आप तन्त्र-मन्त्र की भाषा में इस प्रकार से तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं—

१. मन्त्र—देवता की शक्ति को उद्दीप्त कर उसमें गुरुतर शक्ति का संचार करने वाले शब्दसमूह के गूढ़ रहस्य को मन्त्र कहा जाता है।

२. तन्त्र—मन्त्र और सांसारिक वस्तुओं का ऐसा क्रियात्मक विज्ञान जिनसे मनुष्य त्राण पा सके अर्थात् उसके शरीर एवं लक्ष्य की रक्षा हो सके। अत: मन्त्र साधना से गुजरता हुआ क्रियात्मक रूप तन्त्र कहलाता है।

३. यन्त्र—अभीष्ट की प्राप्ति के हेतु मन्त्र का, तन्त्र का, शक्तियों की, प्रक्रियाओं का और साधना के प्रतीकात्मक या चित्रात्मक रूप को यन्त्र कहा जाता है।

यन्त्र एवं उसकी पूजा करके लौकिक कामनाओं की पूर्ति की जाती है अथवा अपनी कामना की पूर्ति का ये क्रियात्मक विधान है। इसके द्वारा साधक साध्य से मिलकर अपनी समस्त इच्छाओं को पूर्ण करता है। इन यन्त्रों के द्वारा न केवल हमारी सांसारिक इच्छाएं पूण होती हैं, बल्कि लौकिक सिद्धियाँ भी मिलती है जिनसे दु:खों की निवृत्ति और अन्त में मुक्ति भी सम्भव है।

प्रस्तुत पुस्तक चमत्कारी ५५ पूजा यन्त्र में शीघ्र प्रभावशाली देवताओं की यन्त्रों की पूजा तथा फिर उनके प्रयोग से क्या-क्या लाभ लिए जा सकते हैं उनका उल्लेख है। वस्तुत: प्रत्येक साधक अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार यन्त्रों की पूजा करके मनोवांछित लाभ उठा सकता है।

**रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार**

# अद्भुत मन्त्र सागर

## सम्पूर्ण पाँचों भाग

लेखक : **तान्त्रिक बहल**

1. यदि आप में लगन, सच्ची श्रद्धा व परिश्रम करने की शक्ति है, विषय पर पूर्ण आस्था है तो विधि-विधानपूर्वक साधना करते हुए आप भी सफल तान्त्रिक बन सकते हैं।

2. कुछ लालची लोगों ने प्रभावशाली मन्त्रों व टोटकों को धार्मिक क्रियाओं में लपेटकर उससे धन कमाना प्रारम्भ कर दिया तो यह विज्ञान अपनी विशेषता खो बैठा। वास्तव में तन्त्र का उद्देश्य है मानवमात्र के कल्याण के लिए कार्य करना।

3. मन्त्र साधक को सशक्त बनाता है और तब साधक जो भी चाहता है उसे प्राप्त कर लेता है। मन्त्र ध्वनि में चमत्कार है। मन्त्रों का सही उच्चारण करने से उसकी मन्त्रात्मक ध्वनि के प्रभाव से साधक मन्त्र शक्ति को जागृत करके उसे आत्मसात करता है। तब साधक स्वयं देवता तुल्य होकर मन्त्रों से लाभ प्राप्त करता है।

4. जड़ी बूटियों के महत्त्व को अति उन्नतशील विज्ञान भी स्वीकार करता है। जब भारत में अनेकों चमत्कारी वनस्पतियाँ विद्यमान हैं तो उनके अद्भुत और अनूठे प्रयोग से हम भी क्यों न स्वास्थ्य लाभ एवं तान्त्रिक लाभ प्राप्त करें।

5. लक्ष्मी अर्थात् धन में अपार आकर्षण है तब यदि सामान्य संसारी उसकी इच्छा करता है तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है! यदि आपमें किसी अदृश्य धन को पाकर मानव सेवा की तीव्र उत्कंठा है तो इस भाग में दिए गए मन्त्रों से आपको गुप्त खजाने अवश्य मिल सकते हैं।

**रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार**

## कौतुक रत्न भाण्डागार

### सम्पूर्ण सातों खण्ड

## चमत्कारी इन्द्रजाल

समस्त तन्त्रों के प्रणेता भगवान शंकर जी एवं महाकाली के आशीर्वाद से इस महानग्रन्थ को प्रस्तुत करने में योगीराज यशपालजी, श्री निषादजी भैरमगढ़ी, तान्त्रिक बहल तथा कपिल मोहन एवं अटवाल से अपार सहयोग मिला है। इसके प्रथम खण्ड में दशमहाविद्या तन्त्र सार, दूसरे खण्ड में अलौकिक तान्त्रिक तरंग, तीसरे खण्ड में उल्लू तन्त्र, कौवा तन्त्र एवं पशु-पक्षी तन्त्र, चौथे खण्ड में मन्त्र और तन्त्र रहस्य, पाँचवे खण्ड में रत्न रहस्य, छठे खण्ड में तान्त्रिक और यन्त्र प्रयोग, सातवें खण्ड में बावन जंजीरा अर्थात् मनुष्य जीवन में काम में आने वाले ५२ प्रकार के सिद्ध प्रयोग इसमें सम्मिलित हैं। इस प्रकार से ८५० पृष्ठों का भरा पूरा यह सजिल्द ग्रन्थ मन्त्र-तन्त्र के साधकों के लिए संग्रहणीय है।

## रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त

### *लेखक*—पं कपिल मोहन जी

भारतीय ज्योतिष की परम्परा में जन्म कुण्डली देखकर फलादेश करने के लिए सर्वप्रसिद्ध ग्रन्थों में, भृगुसंहिता, मानसागरी, बृहज्जातकम् तथा रावण संहिता और दशानन कृत ज्योतिष के सुनहरी सिद्धान्त सर्वविदित हैं लेकिन रावण संहिता की दुर्लभता एवं क्लिष्टता के कारण यह ग्रन्थ अभी तक बाजार में उपलब्ध न था। इस नाम की जो अन्य पुस्तकें अभी कुछ वर्षों से छपीं वह सब भ्रामक, अर्थहीन, ज्योतिष के विषय से सर्वथा परे, तथ्यविहीन व आडम्बरयुक्त हैं। अब इस दुर्लभ ग्रन्थ को प्राप्त करके बड़े परिश्रम से इसकी सरल व सुबोध प्रस्तुति तथा सम्पादन करके पं. कपिल मोहन जी ने इसको सर्वसाधारण के लिए अनुकरणीय बना दिया है। यह एक प्रमाणित फलित ग्रन्थ है, इसका आद्योपांत अध्ययन करें और किसी भी प्रकार की कुण्डली का सटीक फलित बतलाकर आप भी सफल ज्यातिषी बन सकते हैं।

## अलौकिक तान्त्रिक तरंग

*लेखक*—के. एल निषाद 'भैरमगढ़ी'

आप स्वयं सोचे कि अशुद्ध और अप्रमाणिक सामग्री बताने वाली पुस्तकें कामना पूर्ण नहीं कर सकतीं। असली-नकली की पहचान करके कोई भी चीज़ खरीदना दूभर हो गया है, इससे बचें। इतना ही समझकर तान्त्रिक तरंग यह पुस्तक प्रस्तुत की गई है। इस पुस्तक ही सामग्री को देखें, समझें और प्रयोग में लायें। आज सच्ची दीक्षा देने वाले गुरू का मिलना भी लगभग समाप्ति पर है। कोई भी तान्त्रिक साधना अपनी मन की तरंगों के बल पर ही की जा सकती है, केवल कुछ आवश्यक नियमों का पालन कर अपने चंचल मन को वश में करने के लिए जो बातें चाहिएँ वह भी इस पुस्तक में बताई गई हैं। पुस्तक में लक्ष्मी प्राप्ति के अमोघ तन्त्र, गुप्त और अलौकिक टोने-टोटके का प्रयोग, परिवार सुख के तान्त्रिक प्रयोग, वास्तु दोषनिवारक यन्त्र, व्यापार वृद्धि यन्त्र, उल्लू साधना, कौवा तन्त्र, पशु-पक्षी तन्त्र इत्यादि बातों पर विस्तार से बताया गया है।

## उल्लू तन्त्र कौवा तन्त्र और पशु पक्षी तन्त्र

*लेखक* : श्री अनुपम घोष 'मणिपुरी'

इस ग्रन्थ में उल्लू के तान्त्रिक प्रयोग, लक्ष्मी साधना में उल्लू, उल्लू के बोलने के शुभ-अशुभ फल, उल्लू सम्बन्धी शकुन, उल्लू के द्वारा विद्वेषण, उल्लू के द्वारा वशीकरण, अदृश्य होने का प्रयोग, स्तम्भन प्रयोग, रोग दूर करने हेतु उल्लू के पंखों का झाड़ा, व्यवसाय में सफलता के लिए, नौकरी में तरक्की पाने के लिए, सभी प्रकार की प्रयोग विधि सहित दिये गये हैं साथ ही कौवा तन्त्र में—कौवे की कहानी, कौवे का उपयोग, कौवे की बोली, कौवे के शकुन और अपशकुनों का वर्णन, कौवे के तान्त्रिक प्रयोग भी सम्मिलित हैं। पशु-पक्षियों के खण्ड में जंगली सूअर, कछुआ, सियार, लोमड़ी, कुत्ता, खच्चर, गाय, गीदड़, खरगोश, मुर्गा, मोर, कबूतर, बाज़, चमगादड़, गिद्ध, नेवला, हुदहुद, बगुला, सर्प, छिपकली इत्यादि जन्तुओं से तान्त्रिक प्रयोग समझाये गये हैं।

**रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार**

## स्वरोदय के चार रत्न

*संगहकर्ता और अनुवादक :* **बाबा अनुरागदास जी**

प्रत्येक मनुष्य के द्वारा ली जाने वाली श्वास पर आधारित यह पुस्तक नासिकाओं से प्रवाहित होने वाले वायु प्रवाह (स्वर) पर एक अद्वितीय संग्रह है। इसमें सुप्रसिद्ध शिव-पार्वती सम्वाद शिव स्वरोदय, ज्ञान स्वरोदय, पवन स्वरोदय और तत्व स्वरोदय को जन साधारण के लिये एकदम सुगम रूप में प्रस्तुत किया गया है। वैदिक काल से प्रचलित स्वरोदय के ज्ञान से भिन्न-भिन्न लोगों ने जो अनुभव प्राप्त किया वह हमारी मूल्यवान धरोहर हैं।

रत्नों के समान संग्रहणीय इस ज्ञान को एकत्र किया है बाबा अनुराग दास जी ने। इनका मानना है कि यदि आप इस ग्रन्थ को पढ़ेंगे तो आप भी किसी ज्योतिषी या तन्त्र-मन्त्र विज्ञानी की भाँति किसी भी प्रश्न का उत्तर देकर भविष्यवक्ता बन सकते हैं। स्वरोदय के इन चारों रत्नों में दिये गये ज्ञान से कोई भी व्यक्ति अपना तथा समाज का भला कर सकता है। आप भी इस विद्या से पूरा लाभ उठायें।

## कुण्डलिनी सिद्धि

*लेखक* –**श्री प्रकाश नाथ 'तन्त्रेश'**

इसमें सप्तचक्रों का अनुभूत परिचय, कुण्डलिनी जाग्रत साधकों के अनुभव, विभिन्न ग्रन्थों में कुण्डलिनी महिमा, कुण्डलिनी जागरण के मार्ग आदि पर विषद जानकारी के साथ-साथ कुण्डलिनी जागरण सिद्धि हेतु एक सिद्ध पुरुष की कुण्डलिनी की मंत्रात्मक साधना का अभूतपूर्व एवं अनुपम वर्णन है।

**रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार**

श्वास-प्रश्वास की सिद्धि का गहन अध्ययन-

# स्वर शास्त्र

## अर्थात् स्वयं सीखिये स्वरोदय ज्ञान

*लेखक* —**श्री स्वामी हरिहर दास त्यागी**

मनुष्य जब नाक के नथुनों से वायु ग्रहण करता है तो वह '**श्वास**' है तथा जब नाक के नथुनों से प्राण वायु निःसृत करता है तो वह '**प्रश्वास**' कही जाती है। इसी **श्वास-प्रश्वास** की गहन विद्या को जानने का नाम **स्वर शास्त्र** है।

भारतीय ज्योतिष में सर्वप्रथम स्थान रखने वाली इस स्वरोदय विद्या पर बहुत ही कम शोध कार्य हुआ है। अपितु यह स्वयं सिद्ध विद्या है तथापि स्वर का समुचित एवं सर्वस्व ज्ञान प्रदान करने वाले ग्रन्थ संस्कृत में ही उपलब्ध रहे। इन संस्कृतनिष्ठ प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों एवं लुप्तप्राय स्वरज्ञान के साहित्य को एकत्र करके स्वामी श्री हरिहरदास त्योगी जी ने अनकों वर्षों तक पूरे भारत में भ्रमण करके प्रयोग किये तब इसके अनुभवगम्य ज्ञान को सरल दोहों तथा छप्पय में प्रस्तुत किया है।

योग एवं ज्योतिष के इस संयुक्त शास्त्र में मनुष्य जीवन के विभिन्न भविष्यफल बताने की अद्‍भुत शक्ति है। इस पुस्तक का अंतिम भाग ध्यान साधना एवं कुण्डलिनी शक्तिपात के साधकों के लिए भी उपयोगी है।

**रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार**

# 5. प्रख्यात तान्त्रिकों द्वारा रचित विशेष ग्रन्थ

# ८.विभिन्न विषयों की अन्य पुस्तकें

वेद, पुराण, ग्रन्थ, पूजा-पाठ, कर्मकाण्ड की पुस्तकों का मूल्य सूची पत्र मँगवाने के लिये सम्पर्क करें-
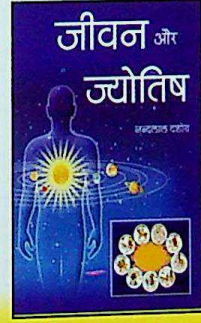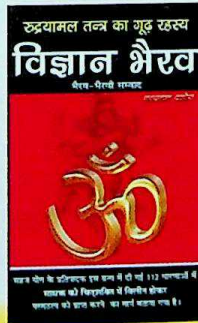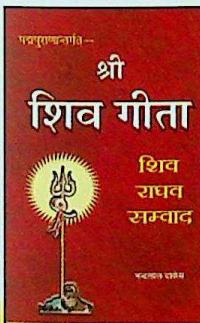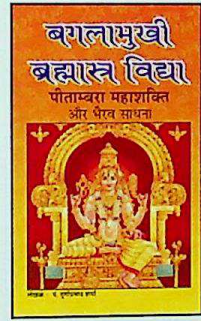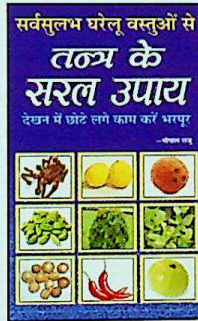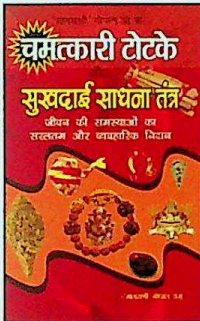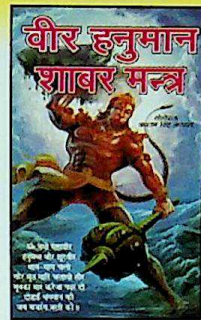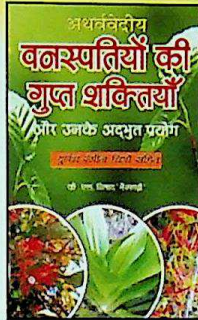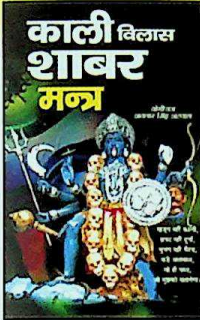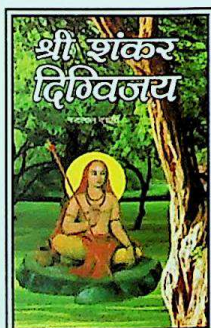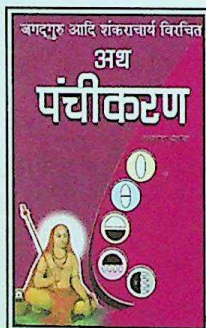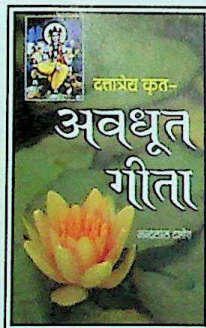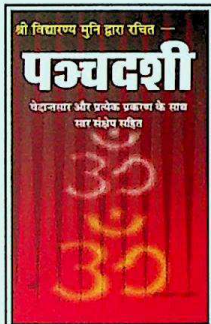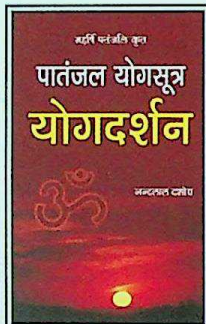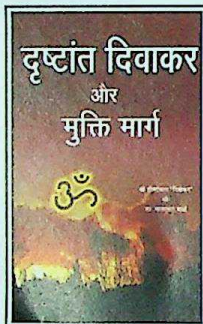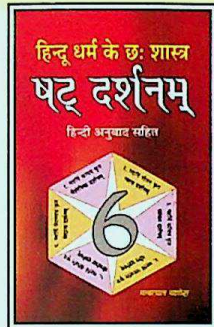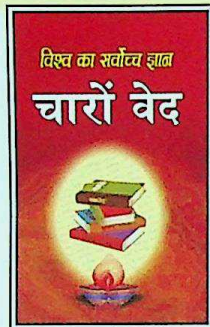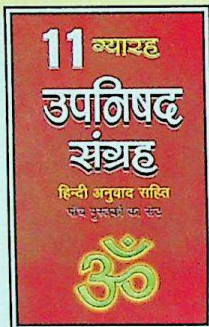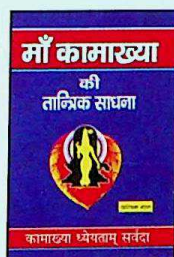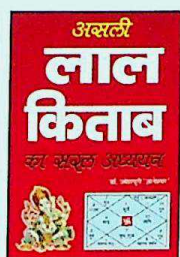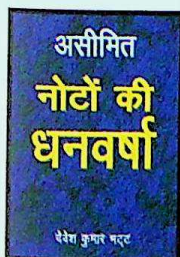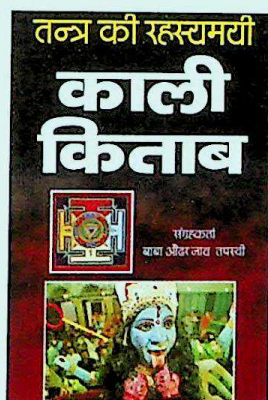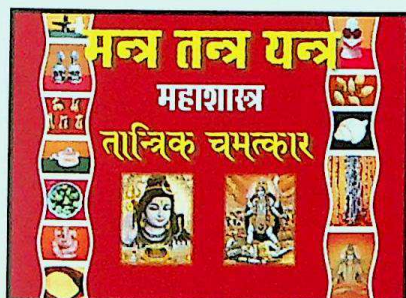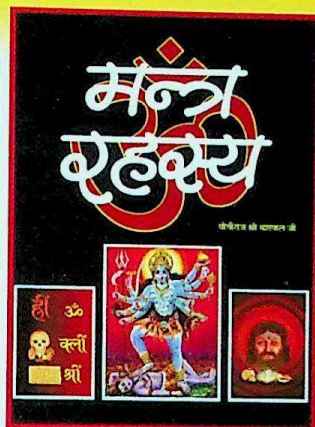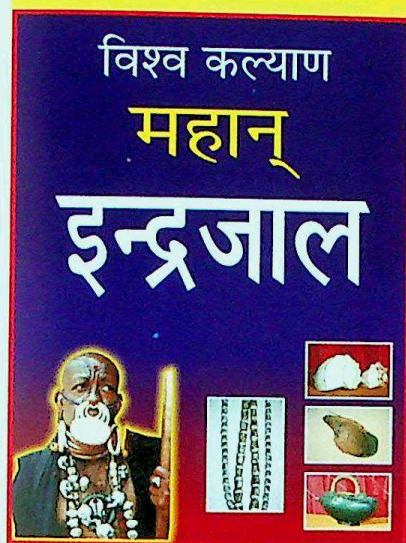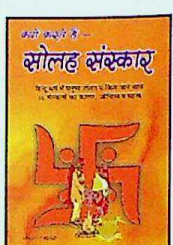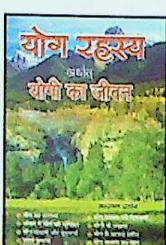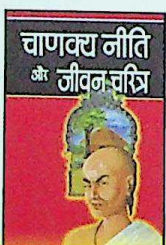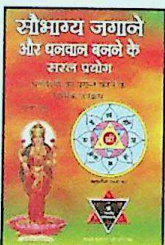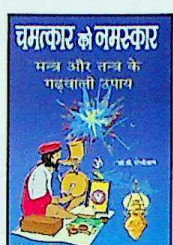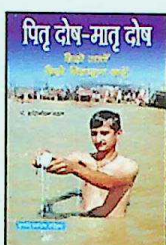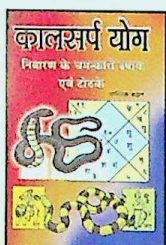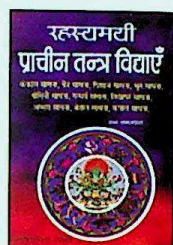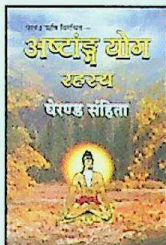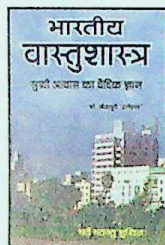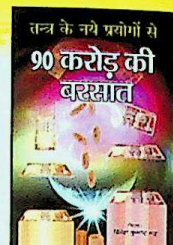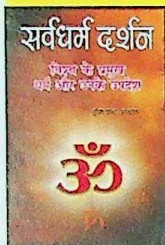
**रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार**

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20

Designed by:- Madhur Graphics, Delhi